हिंदी दैनिक

कलम की पहल

PRGI NO. UAHIN/25/A1323

वर्ष : 02 अंक : 147 पृष्ठ : 08 मूल्य : 1 रूपए नैनीताल, रविवार, 15 नवंबर, 2026

E-mail: kalamkipahaluk@gmail.com Website: kalamkipahal.com

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया 74वें राजकीय औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक गौचर मेले का शुभारंभ

गौचर मेला उत्तराखंड की ऐतिहासिक विरासत, समृद्ध व्यापारिक परंपरा और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक : मुख्यमंत्री

सिमली अस्पताल से जुड़े विषय के समाधान के लिए शीघ्र गठित होगी कमेटी

गौचर और गैरसैंण की पेयजल व्यवस्था को मिली नई मजबूती, मुख्यमंत्री ने किया योजनाओं का लोकार्पण



के.के.पी संवाददाता

देहरादून। गौचर में शनिवार को 74वें राजकीय औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक गौचर मेले का भव्य शुभारंभ हुआ। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने विधिवत पूजा-अर्चना एवं दीप प्रज्ज्वलित कर सात दिवसीय मेले का उद्घाटन किया। गौचर पहुंचने पर मुख्यमंत्री का बैंड की मधुर धुनों, पुष्पमालाओं एवं पारंपरिक तरीके से भव्य स्वागत और अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री ने सर्वप्रथम मेले के संस्थापक स्वर्गीय गोविन्द प्रसाद नौटियाल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर स्थानीय विद्यालयों की छात्राओं ने आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम में लोक संस्कृति के विविध रंग बिखेरे। जिलाधिकारी श्री गौरव कुमार ने मुख्यमंत्री को गौचर मेले का शुभंकर भेंट कर उनका स्वागत किया। मेले का शुभारंभ करते हुए मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि गौचर मेला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उत्तराखंड की ऐतिहासिक विरासत, समृद्ध व्यापारिक परंपरा और विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान का जीवंत प्रतीक है। वर्ष 1943 में स्थानीय व्यापारियों, समाजसेवियों और तत्कालीन प्रशासन के सहयोग से भोटिया व्यापार मेले के रूप में इसकी शुरुआत हुई थी। उस समय गौचर भारत-तिब्बत व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जहां ऊन, पश्मीना, जड़ी-बूटियों सहित विभिन्न स्थानीय उत्पादों का व्यापार होता था। समय के साथ इस मेले ने अपने स्वरूप का विस्तार किया और आज यह औद्योगिक एवं सांस्कृतिक मेले के रूप में प्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गौचर मेला स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों, छोटे उद्यमियों और स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन एवं विपणन का महत्वपूर्ण मंच उपलब्ध कराता है। यह मेला प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प को धरातल पर उतारने का सशक्त माध्यम है। मेले हमारी लोक संस्कृति, लोक कला और पारंपरिक विरासत को संरक्षित करने के साथ ही समाज को आपस में जोड़ने का कार्य करते हैं। पीढ़ियों से चली आ रही इन परंपराओं को सहेजना और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना हम सभी का साझा दायित्व है।

ड्रैगन-PAK की उड़ेगी नींद! भारत ने टैक्टिकल मिसाइल 'प्रलय' का किया सफल परीक्षण



नई दिल्ली। DRDO यानी डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन ने Quasi-बैलिस्टिक मिसाइल, प्रलय का सफल यूजर-ट्रायल परीक्षण किया. DRDO ने यूजर ट्रायल यानी जो सर्विसेज, थलसेना या वायुसेना जो इस मिसाइल का इस्तेमाल करती हैं, उनकी मौजूदगी में यह टेस्ट किया.

150-500 किलोमीटर की रेंज वाली प्रलय एक टेक्टिकल मिसाइल है, जिसका इस्तेमाल दुश्मन के सीमावर्ती कमांड एंड कंट्रोल सेंटर, रडार प्रणाली, छावनियों और एयरफील्ड को तबाह करने के लिए किया जाएगा. जो ICBM मिसाइल होती हैं. इंटर-कॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल वे लंबी दूरी की होती हैं.जैसा नाम से समझ आता है. इन मिसाइल की रेंज 4 से 5 हजार किलोमीटर या उससे इतनी ज्यादा होती है कि एक continent से दूसरे continent तक मार कर सकती हैं. जैसे भारत की अग्नि 4 और 5 मिसाइल हैं जो इतनी दूर तक मार कर सकती हैं. भारत के दुश्मन दोनों पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान, जिनके बॉर्डर भारत से सटे हैं. ऐसे में अगर बॉर्डर से इनके सीमावर्ती सैन्य अड्डों पर हमला करना पड़ जाए तो कैसे करेंगे. उन हमलों के लिए जरूरत पड़ती है Quasi-बैलिस्टिक मिसाइल या फिर जिन्हें हम टेक्टिकल मिसाइल के नाम से जानते हैं. इन्हें शॉर्ट रेंज बैलिस्टक मिसाइल भी कहा जाता है. 'नो फर्स्ट यूज' नीति के चलते, प्रलय मिसाइल का टेस्ट बेहद अहम है. क्योंकि ये मिसाइल, पारंपरिक और बैलिस्टिक मिसाइल के गैप को भरने में मदद करती है. नो फर्स्ट यूज यानी हम किसी भी देश पर परमाणु हथियारों से वार नहीं करेंगे. तब तक न्यूक्लियर वेपन का इस्तेमाल नहीं करेंगे, जब तक दुश्मन हम पर वार नहीं करता है.

पंजाब में 'मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा' की दो बसों की आमने-सामने टक्कर, चार की मौत, दर्जनों घायल



तरनतारन। पंजाब के तरनतारन जिले में नेशनल हाईवे नंबर-54 पर शनिवार शाम करीब 4 बजे भीषण सड़क हादसा हो गया. ये हादसा मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना के तहत श्रद्धालुओं को लेकर जा रही दो बसों की आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई. इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई थी.

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मोटरसाइकिल सवारों को बचाने की कोशिश में एक बस अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार कर सड़क के दूसरी ओर पहुंच गई और सामने से आ रही दूसरी बस से टकरा गई. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बसों के अगले हिस्से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए.

हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई. बसों में सवार यात्रियों की चीख-पुकार सुनाई देने लगी. हादसे में एक दर्जन से अधिक यात्रियों के घायल होने की जानकारी है.

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस प्रशासन और स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया. घायलों को बसों से बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाने की कोशिश की गई. इस बीच हादसे में चार लोगों की मौत हुई है.

इस कारण से नेशनल हाईवे पर यातायात भी प्रभावित होने की आशंका है.

कांग्रेस की भारत समिट में राहुल गांधी का बयान

2014 में भारत में लोकतंत्र खत्म हो गया



हैदराबाद। हैदराबाद के इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में जारी भारत समिट 2026 के आखिरी दिन लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सभा को संबोधित किया. इस दौरान राहुल ने कहा कि मैं उन सभी डेलिगेट्स से माफी मांगना चाहता हूं, जो आने वाले थे, और भारत सरकार के कारण वे नहीं आ सके. यह हमारी गलती नहीं है. इससे आपको अंदाजा लग गया होगा, कि हम यहां क्या झेल रहे हैं.

इसके अलावा राहुल गांधी ने एसआईआर में काटे वोटर्स के नाम और कई मुद्दों को लेकर अपनी बात रखी. साथ ही चुनावों में होने वाली धांधली का भी जिक्र किया. इसके अलावा 2014 में लोकतंत्र खत्म होने की बात भी अपने भाषण में कही.

इस दौरान राहुल गांधी ने फासीवाद का जिक्र करते हुए आगे कहा, 'फासीवादी लोगों की आवाज तेज होती है. कुछ लोग खुद को सवर्ज्ञ मानते हैं. वे लोग हर जगह मौजूद हैं. वे दूसरों की नहीं सुनते हैं. बहुसंख्यक लोग विनम्र होते हैं.

राहुल ने कहा, मैं पूरे भरोसे के साथ कह सकता हूं कि हम मोदी को हराने जा रहे हैं. उनसे छुटकारा पाने वाले हैं. आप इसे सड़कों पर देख सकते हैं. उस डर में भी जो मोदी और अमेति शाह के मन में है. यह तो पहले ही तय हो चुका है.

राहुल ने आगे कहा, 'पिछले एक दशक से फासीवादी लोग चिल्ला रहे हैं और अधिकांश जनता देख रही है कि हो क्या रहा है. 2014 में हमने देखा चुनाव, जो हमने पहले कभी नहीं देखा था. मिलियन डॉलर चुनाव में लगाए गए. चुनाव में जहां पहले करीबी चुनाव होते थे. विपक्ष शॉक में था, और हम पिछले एक दशक से शॉक में हैं.

राहुल ने कहा, '140 मिलियन लोगों ने 2024 के लोकसभा चुनाव में लोगों ने वोट किया. उसे उन्हें या तो नॉन एक्जिस्टिंग वोटर और नॉन वोटर करार दिया गया. अगर चुनाव आयोग ने 140 मिलियन वोटरों को अवैध बता दिया तो चुनाव कैसे वैध हुए. महाराष्ट्र का उदाहरण है. लोकसभा चुनाव में हमारे गठबंधन ने चुनाव जीता. तीन महीने बाद हम हार गए. राजनीतिक गठबंधन पर सवाल उठे. 7 मिलियन नए वोटर को जोड़ा गया और वे बीजेपी के लिए वोट किए. बीजेपी ने चुनाव जीत लिया. '

राहुल ने कहा, 'कांग्रेस पार्टी ने संविधान और आजादी के लिए लड़ाई लड़ी है. हमें लगता था हमारा इतिहास महात्मा गांधी से शुरू होता है, लेकिन यात्रा के दौरान हमें लगा कि हमारा इतिहास इससे ज्यादा है.

सोशल मीडिया पर कमांडर को दी थी जान से मारने की धमकी, CRPF ने जवान को नौकरी से किया बर्खास्त



जम्मू: केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक जवान को सेवा से बर्खास्त कर दिया है. जवान पर आरोप है कि उसने सोशल मीडिया के माध्यम से अपने कंपनी कमांडर को जान से मारने की धमकी दी थी. आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, आरोपी की पहचान असम निवासी प्रोबेशनरी कांस्टेबल पिनाक नाथ के रूप में हुई है. बताया गया है कि पिनाक नाथ जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में तैनात CRPF की 33वीं बटालियन की अल्फा कंपनी में नियुक्त था. वह हाल ही में बल में भर्ती हुआ था. आरोप है कि उसने सोशल मीडिया पर अपने वरिष्ठ अधिकारी के खिलाफ आपत्तिजनक और धमकी भरे संदेश पोस्ट किए थे. मामले को गंभीरता से लेते हुए विभागीय जांच शुरू की गई, जिसमें आरोप सही पाए जाने के बाद उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए सेवा से निष्कासित कर दिया गया. CRPF अधिकारियों का कहना है कि बल में अनुशासन सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रकार की अनुशासनहीनता या वरिष्ठ अधिकारियों को धमकी देने जैसी गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. फिलहाल मामले से जुड़े अन्य पहलुओं की भी जांच की जा रही है. सोशल मीडिया पोस्ट में, नाथ ने अपने कंपनी कमांडर को मारने और फिर खुद भी जान देने की धमकी दी. उसने एक अन्य सुरक्षा बल में हाल ही में हुई उस घटना का जिक्र किया, जिसमें एक जवान ने अपने सर्विस हथियार से अपने सीनियर और साथियों की हत्या कर दी थी. इस पोस्ट को गंभीरता से लेते हुए, बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर ने मामले की जांच कराई. जांच के बाद, शुक्रवार को नाथ को 'केंद्रीय सिविल सेवा (अस्थायी सेवा) नियम, 1965' के नियम 5 के उप-नियम (1) के प्रावधानों के तहत सेवा से बर्खास्त कर दिया गया.

दिल्ली में और जहरीली होगी हवा, सात इलाकों में स्थिति 'गंभीर'



नई दिल्ली। दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति दिन पर दिन खराब होती जा रही है। शनिवार को भी दिल्ली की हवा बहुत खराब श्रेणी में रही। इस बीच दिल्ली अगले कुछ दिनों में स्थिति और भी बिगड़ने की आशंका है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार शनिवार सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 348 दर्ज किया गया जबकि शुक्रवार शाम चार बजे 24 घंटे का औसत एक्यूआई 373 था।

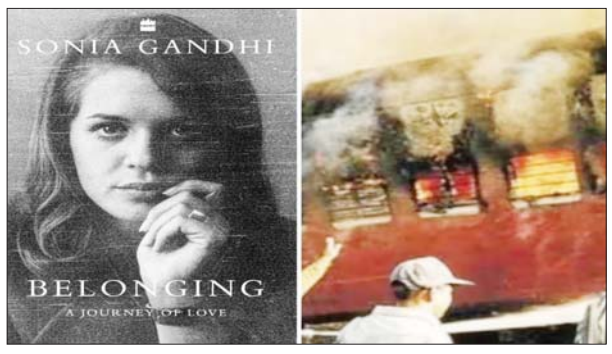
सीपीसीबी के मानकों के अनुसार, शून्य से 50 तक का एक्यूआई 'अच्छा', 51 से 100 तक 'संतोषजनक', 101 से 200 तक 'मध्यम', 201 से 300 तक 'खराब', 301 से 400 तक 'बहुत खराब' और 401 से 500 तक 'गंभीर' श्रेणी में माना जाता है।

दिल्ली में मौजूद 59 एयर क्वालिटी निगरानी केंद्रों में से सात केंद्रों पर शनिवार सुबह एक्यूआई 'गंभीर' श्रेणी में दर्ज किया गया। दिल्ली के लिए वायु गुणवत्ता पूर्व चेतावनी प्रणाली के पूर्वानुमान के अनुसार अगले कुछ दिनों में एक्यूआई और बिगड़ने की आशंका है। कई मौसम केंद्रों पर न्यूनतम तापमान में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की गई। सफदरजंग मौसम केंद्र में न्यूनतम तापमान 16.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 2.9 डिग्री अधिक और शुक्रवार के मुकाबले 0.2 डिग्री ज्यादा है।

इससे पहले इससे पहले एयर क्वालिटी बिगड़ने के कारण, दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने अपने विभागों के 50 प्रतिशत कर्मचारियों को घर से काम करने (डब्ल्यूएफएच) का आदेश दिया था। ग्रैप के तीसरे चरण के तहत सीएक्यूएम ने दिल्ली सरकार और एनसीआर की राज्य सरकारों से सरकारी, नगर निकायों और प्राइवेट ऑफिसों में 50 फीसदी कर्मचारियों की उपस्थिति के साथ कामकाज की अनुमति देने और बाकी कर्मचारियों को घर से काम करने की व्यवस्था लागू करने पर फैसला लेने को कहा है।

एक सरकारी अधिकारी ने कहा, एयर क्वालिटी पर सीएक्यूएम के दिशानिर्देशों के अनुसार, विभागों के प्रमुख घर से काम करने की अनुमति देने के संबंध में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर सोनिया गांधी का दावा बिल्कुल गलत: CBI के पूर्व विशेष निदेशक



नई दिल्ली। सीबीआई के पूर्व विशेष निदेशक राकेश अस्थाना ने गोधरा ट्रेन अग्निकांड मामले से जुड़ी सोनिया गांधी के दावे को खारिज कर दिया है। अस्थाना ने इस ट्रेन अग्निकांड मामले की जांच की थी। उन्होंने सोनिया गांधी की आत्मकथा 'बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव' के उस हिस्से को खारिज कर दिया है, जिसमें आग लगने के कारण को विवादास्पद बताया गया है।

एएनआई के साथ एक इंटरव्यू में सीबीआई के पूर्व निदेशक ने कहा कि इस घटना की जांच पूरी हो चुकी थी और फोरेंसिक साक्ष्यों से आग लगने के कारण का पता चल गया था। उन्होंने कहा कि जांच के नतीजों पर जो भी संदेह जताए जा रहे हैं, वे राजनीतिक कारणों से उठाए जा रहे हैं।

अपनी आत्मकथा में सोनिया गांधी लिखती हैं कि दंगे तब भड़के जब साबरमती एक्सप्रेस की चार बोगियों में आग लगा दी गई, जिसमें 59 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई। यह ट्रेन अयोध्या से राज्य की राजधानी अहमदाबाद लौट रही थी और इसमें राम मंदिर के लिए स्वयंसेवक यानी हिंदू कारसेवक सवार थे। आग लगने का कारण आज भी विवादास्पद है। लेकिन इसके बाद जो हंगामा हुआ, वह राज्य के कई हिस्सों में फैल गया।

इस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए अस्थाना ने कहा कि यह पूरी तरह गलत है। जांच बिल्कुल सही है। यह अदालत में साबित हो चुका है। अगर अब भी कोई इस पर शक जता रहा है तो इसके पीछे राजनीतिक कारण हैं। इसके अलावा और कोई वजह नहीं हो सकती।

अस्थाना से पूछा गया कि क्या यह राजनीतिक कारण किसी खास वोट बैंक से जुड़ा है। इस पर उन्होंने कहा कि गोधरा में मारे गए सभी लोग हिंदू थे और चाहे किसी की भी मौत हो। चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो या सिख। मौत तो मौत होती है, हत्या तो हत्या होती है।

ट्रेड डील में अमेरिका से आई गुड न्यूज

वॉशिंगटन ने नई दिल्ली को भरोसा दिया है कि समझौते के तहत भारत को अपने प्रतिस्पर्धी देशों के मुकाबले अच्छा टैरिफ मिलेगा.

नई दिल्ली। अमेरिका के साथ ट्रेड डील को लेकर भारत के लिए एक बेहद अहम खबर सामने आई है. दोनों देशों के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते पर बातचीत जारी है और इसी बीच वॉशिंगटन ने नई दिल्ली को भरोसा दिया है कि समझौते के तहत भारत को अपने प्रतिस्पर्धी देशों के मुकाबले अच्छी टैरिफ मिलेगी. समाचार एजेंसी ANI ने भारत सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से बताया कि 'अमेरिका ने ट्रेड डील में भारत को उसके प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले टैरिफ का लाभ देने का भरोसा दिया है. अधिकारी ने कहा कि अब यह देखना होगा कि अंतिम समझौते में टैरिफ का ढांचा किस तरह तैयार होता है. भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (BTA) को कई चरणों में पूरा करने की रणनीति पर बात हो रही है. दोनों देश फिलहाल समझौते के पहले चरण यानी शुरुआती पैकेज को अंतिम रूप देने की कोशिश कर रहे हैं. भारत का लक्ष्य है कि मौजूदा वित्त वर्ष के अंत तक इस पहले चरण को पूरा कर लिया जाए. इस वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के मुताबिक, शुरुआती पैकेज और व्यापक व्यापार समझौते पर बातचीत एक साथ चल रही है.

फोर्ती विद्यालय में धूमधाम से मना बाल दिवस, प्रतियोगिताओं में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

सीडीओ अजय सिंह ने विजेताओं को किया पुरस्कृत, विद्यालय की स्वच्छता और चित्रकारी को सराहा

दिव्यांग पूर्व छात्रा ममता जोशी को भेंट की गई सिलाई मशीन



के.के.पी संवाददाता

चम्पावत। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोर्ती में बाल दिवस हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाध्यापक लक्ष्मण सिंह मेहता ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। उन्होंने नेहरू के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच क्विज और रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें गौरव, ज्योति, प्रांजल, कविता, निशा, चित्रा, पाश्वी, सचिन, तनिष्क, रवि और प्रियांशु ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विभिन्न स्थान हासिल किए। प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए कुर्सी दौड़, चित्रकला और गिलास दौड़ प्रतियोगिताएं हुईं। समापन अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजय सिंह और पूर्व शिक्षक नेता एवं भाजपा नेता गोविंद सिंह बोहरा ने विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया। सीडीओ ने विद्यालय की स्वच्छता, अनुशासन, शिक्षण कार्य और परिसर में की गई आकर्षक चित्रकारी की सराहना करते हुए प्रधानाध्यापक लक्ष्मण सिंह मेहता को सम्मानित किया। उन्होंने बच्चों को नशे और मोबाइल के दुष्प्रभावों के प्रति भी सचेत किया। कार्यक्रम में एक संवेदनशील पहल करते हुए गोविंद सिंह बोहरा ने जिला पंचायत अध्यक्ष आनंद सिंह अधिकारी की ओर से विद्यालय की दिव्यांग पूर्व छात्रा ममता जोशी को पैडल सिलाई मशीन भेंट की। ममता सिलाई कर अपनी आजीविका चला रही हैं और इस सहयोग से उन्हें आत्मनिर्भर बनने में और मदद मिलेगी। इस दौरान ग्राम प्रधान रेनू बगौली, उप प्रधान ललित मोहन, क्षेत्र पंचायत सदस्य सोनू चौबे, पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य शंकर बगौली, विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष मदन उपाध्याय और सामाजिक कार्यकर्ता योगेश बगौली ने सीडीओ के सामने विद्यालय और गांव की विभिन्न समस्याएं रखकर उनके समाधान का अनुरोध किया।

चूड़ी वाले हाथ बने आत्मनिर्भरता की मिसाल, एपीडी विम्मी जोशी के प्रयासों से बदली महिलाओं की तस्वीर

जिले में 17,237 महिलाएं आजीविका मिशन से जुड़ीं, 11,128 बनीं लखपति दीदी

बुरांश जूस, लाल चावल, शहद और लोहे की कढ़ाई से बनी चम्पावत की पहचान



के.के.पी संवाददाता

चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के मॉडल जिले चम्पावत में ग्रामीण महिलाएं आज आत्मनिर्भरता की नई कहानी लिख रही हैं। जो महिलाएं कभी घर की चारदीवारी तक सीमित थीं, वे आज अपने उद्यमों के दम पर स्वाभिमान से जीवन जी रही हैं। इस बदलाव में सहायक परियोजना निदेशक (एपीडी) विम्मी जोशी की अहम भूमिका मानी जाती है। उनके आने के बाद महिलाओं के लिए रोजगार के कई नए अवसर खुले और जिले को कई बार प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जिले की 17,237 महिलाएं जुड़कर अपनी सफलता की कहानी लिख रही हैं, जिनमें से 11,128 महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। जिले में दूध उत्पादन में भी इन महिलाओं की बड़ी भूमिका है। महिलाएं बुरांश और प्राकृतिक सिट्रस फलों से ऐसे पेय तैयार कर रही हैं, जो बाजार में बड़े ब्रांडों को टक्कर दे रहे हैं।

फूड कैंटीन और कृषि उत्पादों की बिक्री में भी महिलाओं ने कमाल किया है। यहां का लाल चावल, प्राकृतिक जूस और शहद अब विदेशों तक पहुंच रहा है। हाथ से बनी लोहे की कढ़ाइयां चम्पावत की पहचान बन चुकी हैं और यहां का तेजपात देश के कोने-कोने में जा रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग पर बापरू में बनाया गया कैफे हाउस पर्यटकों को खूब भा रहा है, जहां वे प्राकृतिक नजारों के बीच कॉफी का आनंद लेते हैं।

जंगलों में आग का बड़ा कारण माने जाने वाले पिरूल को महिलाओं ने रोजगार का जरिया बना लिया है। इससे ईंधन ब्रिकेट और घर सजाने का सामान तैयार किया जा रहा है। समूहों की बेकरी, नमकीन और मसालों का स्वाद ऐसा है कि वे समूह के नाम से ही बिक रहे हैं। होली, दीपावली और करवा चौथ जैसे त्योहारों की जरूरत का सामान भी महिलाएं खुद तैयार कर रही हैं। अब पाटी ब्लॉक में कीवी और टनकपुर-बनबसा में आम व लीची उत्पादन पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

एपीडी विम्मी जोशी की योजना अब एक ऐसा गिफ्ट आइटम तैयार करने की है, जो चम्पावत की अलग पहचान बने। उनका कहना है कि यह उपहार जिस घर जाएगा, उसे रोशन करेगा। अपने कार्यकाल में उन्हें कई तबादलों का सामना भी करना पड़ा। विधायक सुबोध उनियाल ने उनकी कार्यक्षमता को देखते हुए उन्हें अपने क्षेत्र में बुलाया था, जहां वे साढ़े तीन साल रहीं।

मुख्यमंत्री ने किया ऐतिहासिक जौलजीबी मेले का शुभारंभ, 102.72 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं की दी सौगात

भारत-नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत और व्यापारिक संबंधों का जीवंत प्रतीक है जौलजीबी मेला : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने 24 विकास योजनाओं का किया शिलान्यास एवं एक योजना का लोकार्पण, मेले के आयोजन हेतु 10 लाख रुपये देने की घोषणा



के.के.पी संवाददाता

पिथौरागढ़। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को जनपद के सीमांत क्षेत्र में काली एवं गोरी नदियों के संगम पर आयोजित ऐतिहासिक जौलजीबी मेले का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जनपद को 102.72 करोड़ रुपये की 25 विकास योजनाओं की सौगात दी। इनमें 102.48 करोड़ रुपये की 24 योजनाओं का शिलान्यास तथा 24 लाख रुपये की एक योजना का लोकार्पण शामिल है। मुख्यमंत्री ने जौलजीबी मेले के आयोजन के लिए 10 लाख रुपये की धनराशि देने की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐतिहासिक जौलजीबी मेला भारत और नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत, आपसी सौहार्द और व्यापारिक संबंधों का जीवंत प्रतीक है। यह मेला सदियों से दोनों देशों के लोगों को सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से जोड़ने का कार्य करता आ रहा है। भारत, नेपाल और तिब्बत के बीच व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंधों के इतिहास में इस मेले का विशेष स्थान रहा है। उन्होंने कहा कि जौलजीबी मेला सीमांत क्षेत्र की समृद्ध परंपराओं और लोकसंस्कृति को संरक्षित रखने के साथ ही दोनों देशों के नागरिकों के बीच आत्मीय संबंधों को और मजबूत करता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जौलजीबी मेले से उनका बचपन से विशेष लगाव रहा है। उन्होंने यहां की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और स्थानीय रीति-रिवाजों को निकट से देखा है। ऐसे आयोजन हमारी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत बनाए रखने के साथ ही नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि लोक कलाकारों, स्थानीय उत्पादों और पारंपरिक व्यवसायों को प्रोत्साहन देने में भी इस प्रकार के मेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड की भूमि हमारे पूर्वजों के त्याग, परिश्रम और संघर्ष की अमूल्य विरासत है। इस विरासत का संरक्षण और प्रदेश का समग्र विकास हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार उत्तराखण्ड के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक बताया है। इस संकल्प को साकार करने के लिए सरकार विकास योजनाओं को धरातल पर उतारने के साथ ही प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमांत क्षेत्रों का विकास राज्य सरकार की विशेष प्राथमिकता है। इन क्षेत्रों में सड़क, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सीमांत क्षेत्रों में प्राकृतिक सौंदर्य, साहसिक पर्यटन और समृद्ध लोकसंस्कृति के माध्यम से स्थानीय युवाओं के लिए स्वरोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं। सरकार का प्रयास है कि दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध होने के साथ ही स्थानीय स्तर पर आजीविका के नए अवसर भी प्राप्त हों।

लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ में एन पी सी सी कार्यलय का हुआ शनिवार को उद्घाटन



के.के.पी संवाददाता/हरीश चन्द्र ऊखीमठ

रूद्रप्रयाग। ऊखीमठ शनिवार को लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के कार्यालय में एन पी सी सी कार्यलय का केदारनाथ विधायक आशा नोटियाल द्वारा विधिवत उद्घाटन किया गया वहीं विधायक आशा नोटियाल ने कहा कि ऊखीमठ में राष्ट्रीय परियोजना निर्माण निगम एन पी सी सी के कार्यालय का विधिवत उद्घाटन किया उन्होंने कहा कि एन पी सी सी कार्यालय की स्थापना केदारनाथ विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को गति देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है इससे विभिन्न निर्माण योजनाओं के संचालन, प्रभावी अनुश्रवण एवं कार्यों के बेहतर समन्वय में सुविधा मिलेगी वहीं लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के अधिशासी अभियंता इन्द्रजीत सिंह बोस ने कहा कि शनिवार को लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के कार्यालय में एन पी सी सी कार्यलय का उद्घाटन किया गया उन्होंने कहा कि अब केदारनाथ विधानसभा व ऊखीमठ क्षेत्र की जनता व ग्रामीणों को मोटर मार्गों की डामरीकरण व अन्य समस्या के समाधान को लेकर रूद्रप्रयाग व जखोली नहीं जाना पड़ेगा उनकी समस्या का समाधान अब लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ में ही किया जाएगा अधिशासी अभियंता इन्द्रजीत सिंह बोस ने कहा कि एन पी सी सी विभाग के पास अभी 7 सड़कों का कार्य लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के पास आई है साथ ही अब जितनी भी एन पी सी सी विभाग की नये सड़कों व अन्य योजना आयेगी व सीधे लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के पास आयेंगी और व ही उसका समाधान करेंगे इस मौके पर भाजपा मण्डल अध्यक्ष दलबीर सिंह नेगी, उपाध्यक्ष पूर्व प्रधान जगदीश लाल, सभासद बलबीर पंवार, मीरा देवी, लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के एई ललित कुमार, नरेन्द्र कुमार, सतेन्द्र राणा, व समस्त विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे।

ग्रामोत्थान के कार्यक्रम प्रबंधक ने परखा उन्नति सीएलएफ बनबसा का कामकाज

फूड वैन, संग्रहण केंद्र और सामूहिक उद्यमों का किया स्थलीय निरीक्षण, स्टाफ को दिए दिशा-निर्देश



के.के.पी संवाददाता/बनबसा (चम्पावत)। ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना प्रबंधन इकाई देहरादून के कार्यक्रम प्रबंधक (संस्थाएं एवं समावेशन) रईस अहमद ने उन्नति संकुल स्तरीय संघ (सीएलएफ) बनबसा के क्लस्टर कार्यालय और फील्ड स्तर पर चल रही गतिविधियों का स्थलीय भ्रमण कर कार्यों की प्रगति की समीक्षा की।

समीक्षा के दौरान कार्यक्रम प्रबंधक ने अल्ट्रा पुअर पैकेज, शेयर मैचिंग, बिजनेस टर्नओवर और लाभांश वितरण, सामूहिक उद्यमों की स्थापना व संचालन, वे-साइड ईटरीज फूड वैन, संग्रहण केंद्र और ग्रेडिंग जैसी गतिविधियों की जानकारी ली।

उन्होंने कार्यालय में संघ के दस्तावेजों का भी निरीक्षण किया और बेहतर कार्य प्रबंधन के लिए ब्लॉक व फील्ड स्टाफ को आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा-निर्देश दिए। समीक्षा बैठक में ग्रामोत्थान के परियोजना सहायक दीपक खाती, ब्लॉक आजीविका समन्वयक हरीश गोस्वामी, बिजनेस प्रमोटर राधा चंद, बोर्ड सदस्य रेनू देवी और गीता पांडे आदि उपस्थित रहे।

मंत्री राम सिंह कैड़ा ने पहाड़पानी में लगाया श्रम विभाग का बहुउद्देशीय शिविर, 15 गांवों के पंजीकृत श्रमिकों को वितरित की सामग्री

ग्रामीणों को अब श्रमिक कल्याण योजनाओं का लाभ लेने के लिए हल्द्वानी के नहीं लगाने पड़ेंगे चक्कर - मंत्री कैड़ा



के.के.पी संवाददाता

धारी। भीमताल विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत धारी ब्लॉक के पहाड़पानी में कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा की पहल पर श्रम विभाग द्वारा बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में क्षेत्र के लगभग 15 गांवों के उत्तराखंड भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत लगभग 8 सौ से 1 हजार श्रमिकों को खाद्य सामग्री सहित विभिन्न उपयोगी सामग्री वितरित की गई।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने कहा कि पहाड़पानी एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को श्रमिक कल्याण योजनाओं का लाभ लेने और अपनी सामग्री प्राप्त करने के लिए हजारों रुपये खर्च कर हल्द्वानी जाना पड़ता था। कई बार इतनी परेशानी उठाने के बावजूद भी उन्हें खाली हाथ वापस लौटना पड़ता था। ग्रामीणों की इस गंभीर समस्या को देखते हुए पहाड़पानी में श्रम विभाग का शिविर आयोजित कर श्रमिकों को उनके गांव के नजदीक ही सामग्री उपलब्ध कराई गई। मंत्री कैड़ा ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार श्रमिकों के कल्याण एवं उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रही है। कर्मकार कल्याण बोर्ड एवं श्रम विभाग के माध्यम से श्रमिकों के बच्चों को छात्रवृत्ति, श्रमिक परिवारों की बेटियों के विवाह हेतु आर्थिक सहायता, प्रसूति महिलाओं को आर्थिक सहायता तथा श्रमिक की मृत्यु होने पर उनके आश्रितों को आर्थिक सहायता जैसी अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं! इस दौरान ब्लॉक प्रमुख भावना आर्य, जीवन बर्गली, ललित शर्मा, पंकज मेलकानी, प्रधान देवेंद्र चौसाली, प्रधान विपिन सनवाल, नवीन चंद्र, प्रधान भूपेश तिवारी, कृष्णा मेलकानी, दिनेश मेलकानी लोकेश नेगी, आन सिंह, पवन महतोलिया, अनिल कुमार, मोहन पड़ियार सहित सैंकड़ो लोग मौजूद रहे!

युवा संवाद कार्यक्रम में एसएसजे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और कुलपति हुए शामिल



के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। राज्यपाल एवं कुलाधिपति सचिवालय उत्तराखंड से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में आयोजित 'युवा संवाद कार्यक्रम' में सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रवीण सिंह बिष्ट, टीम मैनेजर और विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। विश्वविद्यालय के पिथौरागढ़ परिसर के बीएड के चयनित विद्यार्थी टीम मैनेजर के साथ लोकभवन में उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बिष्ट ने बताया कि विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों और युवा प्रतिभाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से आयोजित युवा संवाद कार्यक्रम में राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, विद्यार्थी और शिक्षक शामिल हुए। उन्होंने बताया कि सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय की ओर से टीम मैनेजर महिमन जोशी के साथ आकांक्षा चंद, कंचन भंडारी, हर्षित पंत, दीपांशु जोशी, अक्षत दीक्षित, जयशंकर भट्ट, मंजू, राजन गिरी, ज्योति शाही, योगेश कुमार, निकिता सोनी, अंजलि कठायत और अंजलि सामंत ने प्रतिभाग किया।

मानकों के अनुरूप साहित्य सृजन जरूरी: प्रो. बिष्ट

● उत्तराखंड भाषा संस्थान के उपाध्यक्ष ने किया राष्ट्रीय कुमाउंनी भाषा सम्मेलन का शुभारंभ ● कुमाउंनी को 8वीं अनुसूचि में शामिल करने और रोजगार से जोड़ने पर खासा जोर





के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा: 18वां राष्ट्रीय कुमाउंनी भाषा सम्मेलन आज यहां शिखर सभागार में शुरू हो गया। इस दो दिनी सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि उत्तराखंड भाषा संस्थान के उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री) प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने किया। उन्होंने कहा कि मानकों के अनुरूप साहित्य सृजन जरूरी है। वहीं उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. केसी जोशी ने कुमाउंनी भाषा की प्राचीनता व साहित्य पर विस्तृत जानकारी दी। पहले दिन वक्ताओं ने कुमाउंनी को आठवीं अनुसूचि में शामिल करने और इसे रोजगार से जोड़ने पर खासा जोर दिया। सभी वक्ताओं ने कहा कि अपनी पहचान, संस्कृति, समाज व भाषा को बचाने के लिए एकजुट प्रयास हों।

इससे पहले मुख्य अतिथि समेत अन्य विशिष्ट अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। सूचना विभाग एवं संस्कृति विभाग की ओर से जै नंदा लोक कला केंद्र की टीम ने चंदन बोरा एवं विमला बोरा के नेतृत्व में संस्कार गीत, वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम का आगाज किया। वहीं छोलिया नृतक दल ने अपनी प्रस्तुति से माहौल को कुमाउंनी रंग में रंगा। अतिथियों को बैच अलंकरण कर स्वागत किया गया। सर्वप्रथम मुख्य वक्ता प्रो. केसी जोशी ने उद्घाटन सत्र के 'कुमाउंनी भाषा की प्राचीनता, साहित्य, कुमाउंनी को आठवीं अनुसूचि में शामिल करना' विषय पर विस्तृत बात रखी। उन्होंने कहा कि कुमाउंनी काफी पुरानी भाषा है, जो चंद व कत्यूर शासकों के जमाने से प्रचलन में रही है। ऐसे उल्लेख कई ताम्रपत्रों, शिलालेखों व भोजपत्रों में मिले हैं। उन्होंने कहा कि 989 ईसवीं के तामपत्र में भी उल्लेख मिला है और कुमाउंनी के पहले गद्य लेखक राम चंद्र त्रिपाठी रहे हैं, जिन्होंने 1728 ईसवीं में चाणक्य नीति का कुमाउंनी में अनुवाद किया था। इसके बाद गुमानी पंत जैसे विद्धानों ने कुमाउंनी साहित्य को सींचकर आगे बढ़ाया। प्रो. जोशी ने कहा कि विविध विधाओं में वर्तमान में कुमाउंनी भाषा में अथाह साहित्य मौजूद है और रचनाधर्मी व साहित्यकार लगातार इसे आगे बढ़ाने में जुटे हैं। मगर हर बार मांग उठने के बाद भी कुमाउंनी को आठवीं अनुसूचि में शामिल नहीं किया गया। इसके लिए एकजुट प्रयासों की जरूरत है। मुख्य वक्ता ने कहा कि हमें अपनी पहचान, संस्कृति, समाज व भाषा को बचाए रखना होगा। उन्होंने 8वीं अनुसूचि में शामिल करने के? लिए जरूरी बिंदुओं की तरफ भी ध्यान खींचा। उन्होंने इसे रोजगार से जोड़ने पर बल दिया।

मुख्य अतिथि उत्तराखंड भाषा संस्थान के उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री) प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने कहा कि साहित्य की हर विधा के मानक हैं और इन्हीं मानकों के अनुरूप साहित्य सृजन होना जरूरी है। उन्होंने साहित्य/लेखन के क्षेत्र में उत्तराखंड सरकार की सम्मान व पुरस्कार योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि 22 प्रकार के पुरस्कार हैं। जिन पर सालभर में 60 लाख का खर्चा है। उन्होंने कहा कि सरकार की इन योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। यह भी कहा कि इन योजनाओं के तहत आने वाले प्रस्तावों/आवेदनों पर उत्तराखंड भाषा संस्थान में गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सवाल सिर्फ भाषा और साहित्य का ही नहीं है, बल्कि संस्कृति का भी है, क्योंकि हमारी संस्कृति ही साहित्य में बसती है। विशिष्ट अतिथि नेहरू युवा केंद्र संगठन के पूर्व निदेशक दयानंद आर्य ने कुमाउंनी को 8वीं अनुसूचि में शामिल करने पर जोर दिया। वहीं पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बीएस बिष्ट ने कहा? कि कुमाउंनी हमारी पहचान है। इसलिए इसके प्रति हमें गंभीर रहना होगा। वृक्षमित्र ?किशन मलाड़ा ने कहा कि कुमाउं की धरती पर पर्यावरण को संरक्षित करते हुए हमें अपनी संस्कृति को बचाए रखना होगा। साहित्यकार नारायण सिंह लोधियाल ने भी कुमाउंनी भाषा के संरक्षण पर जोर दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए पूर्व प्रधानाचार्य देव सिंह पिलख्वाल ने कहा कि कुमाउंनी के विकास के लिए युवा वर्ग को प्रो?त्साहित किया जाना चाहिए। छिपी प्रतिभाओं को आगे लाना होगा, उन्हें लेखन प्रतियोगिताओं से जोड़ा जाए। उन्होंने वर्तमान में प्रेरणादायक व ज्ञानवर्धक साहित्य की जरूरत बताई।

90 वर्षीय साहित्यकार भी सम्मेलन में पहुंचे

अल्मोड़ा: सम्मेलन में बैजनाथ निवासी 90 वर्षीय वयोवृद्ध साहित्यकार गोपाल दत्त भट्ट भी पहुंचे और उन्होंने इतनी उम्र में भी जोशीले अंदाज में संबोधन किया। उन्होंने कहा कि कुमाउंनी को रोजगार से जोड़ना जरूरी है, ताकि इसे मजबूती व सम्मान मिल सके। इसे प्राइमरी से पढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजनैतिक दलों के चुनावी घोषणा पत्र में यह घोषणा होनी चाहिए कि कुमाउंनी को 8वीं अनुसूचि का दर्जा दिलाया जाएगा और पाठ्यक्रम में शामिल करवाया जाएगा। उन्होंने साहित्यकारों का आह्वान भी किया कि वे आज के संदर्भ व आज की जरूरत पर साहित्य लिखें।

इगास के रंग में रंगे सूचना महानिदेशक व उपाध्यक्ष MDDA बंशीधर तिवारी, पहाड़ी गीतों पर जमकर थिरके

उत्तराखंड की लोक संस्कृति और परंपराओं के प्रति प्रेम जब व्यवहार में दिखाई देता है, तो वह लोगों के लिए एक खूबसूरत संदेश बन जाता है। कुछ ऐसा ही नजारा देहरादून में आयोजित इगास बग्वाल के विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम में देखने को मिला।





के.के.पी संवाददाता

देहरादून। दीपावली के 11 दिन बाद मनाए जाने वाले उत्तराखंड के पारंपरिक लोकपर्व इगास के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सूचना महानिदेशक व उपाध्यक्ष स्व्ष्ठ बंशीधर तिवारी पूरी तरह पहाड़ी रंग में रंगे नजर आए। देहरादून बंजारावाला के गंगोत्री विहार में आयोजित कार्यक्रम में पारंपरिक लोकगीतों की धुन गूंजी तो बंशीधर तिवारी खुद को थिरकने से नहीं रोक पाए। उन्होंने पहाड़ी गीतों पर जमकर नृत्य किया और कार्यक्रम में मौजूद लोगों का उत्साह बढ़ाया। इस दौरान भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर चौहान ने भी उनके साथ कदम से कदम मिलाए। बंशीधर तिवारी की यह सहज सहभागिता कार्यक्रम का खास आकर्षण रही। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि रोजगार और बेहतर अवसरों की तलाश में भले ही उत्तराखंड के लोग देश-दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पहुंच गए हों, लेकिन अपनी संस्कृति, सभ्यता और जड़ों से जुड़े रहना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि इगास जैसे लोकपर्व हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं। ऐसे आयोजन न केवल हमारी परंपराओं को जीवंत रखते हैं, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी विरासत से परिचित कराने और समाज में आपसी मेलजोल बढ़ाने का भी काम करते हैं। बंशीधर तिवारी की लोकगीतों पर थिरकती तस्वीरें और उनकी सांस्कृतिक सहभागिता ने एक खूबसूरत संदेश दिया कि अपनी संस्कृति को बचाने के लिए जरूरी है कि हम उस पर गर्व भी करें और उसे अपने जीवन का हिस्सा भी बनाएं।

केंद्रीय कर्मचारियों को 1.80 लाख तक का लैपटॉप देगी सरकार



नई दिल्ली। अगर आप केंद्रीय कर्मचारी हैं तो ये खबर आपके काम की हो सकती है। दरअसल, वित्त मंत्रालय ने एक ऐसा नियम लाया है जिसके तहत सरकारी कर्मचारी जल्द ही अपने ऑफिस के काम में इस्तेमाल होने वाले लैपटॉप को बिना कोई पैसे दिए घर ले जा सकेंगे।

दरअसल, वित्त मंत्रालय ने अपनी डिवाइस खरीद नीति में बदलाव किया है। इसके तहत केंद्र सरकार के पात्र अधिकारी चार साल तक इस्तेमाल करने के बाद, उन्हें दिए गए लैपटॉप, टैबलेट और इसी तरह के अन्य गैजेट्स अपने पास रख सकेंगे। नए नियमों के तहत विभाग 1.80 लाख रुपये (प्लस टैक्स) तक की कीमत वाले डिवाइस खरीद सकते हैं। इस बजट में एप्पल के मैकबुक एयर और प्रो मॉडल खरीदे जा सकते हैं। इस नए नियम ने जुलाई 2023 में जारी इस संबंध में पुराने निर्देशों की जगह ली है।

बता दें कि वर्ष 2023 के नियम के तहत मोबाइल उपकरणों की खरीद का भी स्पष्ट जिक्र था लेकिन इस बार नहीं है। सातवें केंद्रीय वेतन आयोग के वेतन लेवल-12 और उससे ऊपर के सभी सरकारी कर्मचारी या अधिकारी इन उपकरणों के पात्र होंगे। वहीं, वेतन लेवल-8 से 11 के अधिकारियों में से किसी विभाग के अधिकतम 50 प्रतिशत अधिकारियों को ही ये उपकरण दिए जा सकेंगे। दिशानिर्देशों के अनुसार, संबंधित मंत्रालय या विभाग के सचिव वित्तीय सलाहकार से परामर्श करके इन वेतन स्तर के अधिकारियों की स्वीकृत संख्या के 75 प्रतिशत तक को उनकी कार्य संबंधी जरूरतों के आधार पर उपकरण देने की अनुमति दे सकते हैं।

खरीद की तारीख से चार साल तक ये उपकरण सरकार की संपत्ति रहेंगे। हालांकि, उपकरण पाने वाला अधिकारी उसमें मौजूद आंकड़ों और सूचनाओं की सुरक्षा के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होगा।

उत्तराखंड में बढ़ा मेडिकल और नर्सिंग शिक्षा का दायरा

धामी सरकार के कार्यकाल में तीन नए मेडिकल और तीन नर्सिंग कॉलेज शुरू, प्रदेश में एमबीबीएस की 1700 और नर्सिंग की 11,495 सीटें

के.के.पी संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कार्यकाल के दौरान उत्तराखंड में ना सिर्फ स्वास्थ्य सेवाएं मजबूत हुई हैं, बल्कि चिकित्सा शिक्षा के अवसर भी बढ़े हैं। प्रदेश को गत पांच वर्षों में तीन नए राजकीय मेडिकल कॉलेज और तीन राजकीय नर्सिंग कॉलेजों की सेवाएं मिलनी शुरु हो गई हैं। इससे प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा का दायरा बढ़ने के साथ युवाओं के लिए मेडिकल और नर्सिंग की पढ़ाई के अवसर भी बढ़े हैं। वहीं, आम लोगों को कैशलेस उपचार उपलब्ध कराने वाली अटल आयुष्मान योजना और राज्य कर्मचारियों की गोल्डन कार्ड योजना के लिए अनुपूरक बजट में अतिरिक्त धनराशि का प्रावधान किया गया है। प्रदेश में वर्तमान में छह राजकीय मेडिकल कॉलेज संचालित हैं। इनमें देहरादून, हल्द्वानी, श्रीनगर, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और हरिद्वार शामिल हैं। अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और हरिद्वार मेडिकल कॉलेज की शुरुआत धामी सरकार के कार्यकाल में हुई है। इन छह सरकारी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की 675 सीटें उपलब्ध हैं। रुद्रपुर में मेडिकल कॉलेज का निर्माण भी पूरा हो चुका है। यहां 100 एमबीबीएस सीटों की अनुमति मिलने पर सरकारी मेडिकल कॉलेजों में सीटों की संख्या बढ़कर 775 हो जाएगी। निजी क्षेत्र के चार मेडिकल कॉलेजों की 900 और एम्स ऋषिकेश की 125 सीटों को मिलाकर प्रदेश में एमबीबीएस की कुल क्षमता करीब 1700 सीटों तक पहुंच गई है।

नर्सिंग शिक्षा में भी बढ़े अवसर

चिकित्सा सेवाओं के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने के उद्देश्य से नर्सिंग शिक्षा का भी विस्तार किया गया है। जुलाई 2021 के बाद प्रदेश में तीन राजकीय नर्सिंग कॉलेज स्थापित हुए हैं। इनके माध्यम से बीएससी नर्सिंग, एमएससी नर्सिंग सहित विभिन्न पाठ्यक्रमों में 321 सीटों की बढ़ोतरी हुई है। अब राजकीय नर्सिंग संस्थानों में कुल 879 सीटें हैं, जबकि निजी संस्थानों में 10,616 सीटें उपलब्ध हैं। इस तरह सरकारी और निजी क्षेत्र को मिलाकर नर्सिंग पाठ्यक्रमों की कुल सीटें 11,495 हो गई हैं। नर्सिंग शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के लिए विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। इसके तहत वर्ष 2023 में दो बैचों के 60 अभ्यर्थियों को जापान और वर्ष 2025 में 13 अभ्यर्थियों को जर्मनी में रोजगार मिला।

स्वास्थ्य योजनाओं के लिए 225 करोड़

स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा शिक्षा के विस्तार के लिए सरकार ने अनुपूरक बजट के जरिए भी कुल 225 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। आम जनता को पांच लाख रुपये तक की कैशलेस चिकित्सा सुविधा देने वाली अटल आयुष्मान योजना के लिए 100 करोड़ रुपये रखे गए हैं। वहीं, राज्य कर्मचारियों को कैशलेस उपचार उपलब्ध कराने वाली गोल्डन कार्ड योजना के लिए 125 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। वहीं चिकित्सा शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए भी करीब 160 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की विशेष प्रतिवेदक ने नैनीताल जिला कारागार का किया स्थलीय निरीक्षण

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली की विशेष प्रतिवेदक शोमिता बिस्वास ने शनिवार को जिला कारागार, नैनीताल का स्थलीय निरीक्षण किया

के.के.पी संवाददाता

नैनीताल। निरीक्षण के दौरान शोमिता बिस्वास ने जिला कारागार में निरुद्ध बंदियों के रहन-सहन, खान-पान, साफ-सफाई, पेयजल, चिकित्सा सुविधा, वातावरण एवं सुरक्षा व्यवस्था की बारीकी से जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बैरकों,रसोई घर, चिकित्सालय, मुलाकात कक्ष एवं पुस्तकालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। बंदियों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और भोजन की गुणवत्ता, मिलने वाली सुविधाओं तथा विधिक सहायता के बारे में पूछताछ की।



शोमिता बिस्वास ने कहा कि बंदियों के मानवाधिकारों का संरक्षण सर्वोच्च प्राथमिकता है। जेल में सभी बंदियों को नियमानुसार पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वातावरण, समय पर चिकित्सा सुविधा और विधिक सहायता मिलनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बंदियों के कल्याण, कौशल विकास, शिक्षा एवं पुनर्वास के लिए चलाई जा रही योजनाओं को और प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।उन्होंने महिला बंदियों, वृद्ध एवं बीमार बंदियों की विशेष देखभाल, बच्चों के साथ रह रही महिला बंदियों के लिए आवश्यक सुविधाओं पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जिला प्रोविजन अधिकारी वर्षा आर्या जिला कार्यक्रम अधिकारी अनुलेखा बिष्ट पुलिस क्षेत्राधिकारी अंजना नेगी उपनिरीक्षक सुनीता कुंवर सब इंस्पेक्टर चंपा जोशी बाल कल्याण पुलिस अधिकारी निशु गौतम जेल अधीक्षक सजीव चिकित्साधिकारी सहित जिला प्रशासन एवं पुलिस के अधिकारी उपस्थित रहे।

तकनीक के साथ पारंपरिक ज्ञान बने आपदा प्रबंधन की ताकत: मा0 राज्यपाल

कहा-उत्तराखण्ड के लोग आपदाओं के प्रति जागरूक और सतर्क

मा0 राज्यपाल ने आपदा प्रबंधन को और प्रभावी बनाने के लिए समुदाय की सहभागिता, तकनीक और अर्ली वार्निंग सिस्टम को मजबूत करने के दिए निर्देश

के.के.पी संवाददाता

देहरादून। राज्यपाल डॉ. ढाल सिंह बिसेन ने कहा कि उत्तराखण्ड के लोग आपदाओं के प्रति बहुत पहले से ही जागरूक, संवेदनशील और सतर्क हैं। यही जागरूकता और सामुदायिक क्षमता राज्य को विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का प्रभावी ढंग से सामना करने वाले राज्यों में अग्रणी बनाती है। उन्होंने कहा कि राज्य की भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों को देखते हुए आपदा प्रबंधन को केवल सरकारी तंत्र तक सीमित न रखकर समुदाय को इसका सक्रिय भागीदार बनाया जाना आवश्यक है। उन्होंने ग्राम स्तर पर स्वयंसेवकों को तैयार करने के निर्देश दिए।

उन्होंने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में समुदायों की सहभागिता एवं सशक्तीकरण पर विशेष जोर देते हुए निर्देश दिए कि स्थानीय स्तर पर लोगों को आपदा के दौरान किए जाने वाले उपायों, सुरक्षित निकासी, प्राथमिक उपचार, खोज एवं बचाव तथा आपातकालीन संचार के संबंध में लगातार प्रशिक्षित एवं जागरूक किया जाए। उन्होंने कहा कि आपदा के समय पहला और सबसे प्रभावी प्रतिक्रियादाता स्थानीय समुदाय ही होता है, इसलिए समुदाय की क्षमता को मजबूत करना राज्य की आपदा प्रबंधन रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए।

मा0 राज्यपाल ने कहा कि आपदा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाने में स्थानीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और वर्षों से अर्जित अनुभव का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने अपने अनुभव के आधार पर मौसम, जलस्रोतों, नदी-नालों, भूस्खलन संभावित क्षेत्रों तथा प्राकृतिक परिवर्तनों को समझने की अपनी विशिष्ट क्षमता विकसित की है। उन्होंने निर्देश दिए कि इस पारंपरिक एवं स्थानीय ज्ञान का वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वय करते हुए आपदा प्रबंधन की योजनाओं में उपयोग किया जाए। उन्होंने एनजीओ के साथ ही कृषक समूहों को आपदा प्रबंधन से जोड़ने के निर्देश दिए। मा0 राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड को आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में दुनिया के अन्य आपदा-प्रवण देशों द्वारा किए जा रहे नवाचारों और सफल प्रयासों का अध्ययन कर उनसे सीखना चाहिए। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने बताया कि मा0 राज्यपाल डॉ. ढाल सिंह बिसेन ने जो भी दिशा-निर्देश दिए हैं, उन पर जल्द अमल किया जाएगा तथा उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा। श्री सुमन ने बताया कि मा0 राज्यपाल से भेंट के दौरान उन्होंने राज्य में आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों, आपदा पूर्व तैयारियों, राहत एवं बचाव व्यवस्था, अर्ली वार्निंग सिस्टम, आधुनिक तकनीक के उपयोग तथा विभिन्न एजेंसियों के मध्य समन्वय के संबंध में राज्यपाल को विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान कमाण्डेंट राज्य आपदा प्रतिवादन बल जौलीग्रांट देहरादून श्री अर्पण यदुवंशी एवं 15वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचन बल गदरपुर ऊधमसिंह नगर के कमाण्डेंट श्री संतोष कुमार भी उपस्थित रहे।

आम लोगों तक समय पर अलर्ट पहुंचाने के निर्देश

मा0 राज्यपाल ने आपदा प्रबंधन में आधुनिक तकनीक के अधिकतम उपयोग पर जोर देते हुए कहा कि यदि लोगों को समय रहते सही और विश्वसनीय चेतावनी प्राप्त हो जाए तो वे समय पर सुरक्षित स्थानों की ओर जा सकते हैं और जान-माल के नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। उन्होंने निर्देश दिए कि विभिन्न प्रकार की आपदाओं के संबंध में प्राप्त चेतावनियों को त्वरित रूप से आम जनता तक पहुंचाने की व्यवस्था को और मजबूत किया जाए।

इसके लिए मोबाइल आधारित अलर्ट, एसएमएस, सोशल मीडिया, स्थानीय संचार माध्यमों, सामुदायिक रेडियो तथा अन्य उपलब्ध माध्यमों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जाए।

डॉप्लर रडार का नेटवर्क मजबूत करने के निर्देश

मा0 राज्यपाल ने राज्य में अर्ली वार्निंग सिस्टम को और अधिक मजबूत करने तथा संवेदनशील क्षेत्रों में इसकी पहुंच बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने मौसम एवं अन्य प्राकृतिक खतरों की सटीक एवं स्थानीय स्तर पर निगरानी के लिए डॉप्लर रडार की संख्या बढ़ाने तथा आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों को आपदा प्रबंधन व्यवस्था से जोड़ने पर जोर दिया।

एसईओसी और डीईओसी के माध्यम से मजबूत हो समन्वय

मा0 राज्यपाल ने राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र तथा जिला आपातकालीन परिचालन केंद्र की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए निर्देश दिए कि इनके माध्यम से सभी जनपदों एवं संबंधित रेखीय विभागों के मध्य 24म7 प्रभावी समन्वय और सूचना का त्वरित आदान-प्रदान सुनिश्चित किया जाए।

रामनगर विधानसभा चुनाव 2027 के लिए राहुल सिंह दरम्वाल ने हनुमान धाम मंदिर दर्शन के बाद सैकड़ो युवाओं के साथ किया जनसंपर्क अभियान शुरू

के.के.पी संवाददाता

रामनगर। 61 विधानसभा चुनाव में राहुल सिंह दरम्वाल ने अब जनता के बीच जनसंपर्क अभियान शुरू कर दिया है आज रामनगर विधानसभा के छोई स्थित हनुमान धाम में सुबह उन्होंने सैकड़ो युवाओं के साथ पूजा - अर्चना कर आशीर्वाद लिया और रामनगर विधानसभा के विकास और रामनगर विधानसभा क्षेत्र की सम्मानित जनता से आग्रह किया कि अपने क्षेत्र और विकास के लिए एक ऐसे जनप्रतिनिधि का चुनाव करें जो उनके हर सुख - दुख में खड़ा रहे और उनकी क्षेत्र की तमाम समस्याओं का समाधान कर सके ।

वही राहुल सिंह दरम्वाल ने आज से मंदिर में दर्शन के बाद स्थानीय लोगों से मुलाकात कर अपने समर्थन में वोटिंग करने के लिए कहा दरम्वाल ने कहा की वह पिछले कई वर्षों से पत्रकारिता के माध्यम से भी समाज की समस्याओं को उठाकर उनके समाधान का प्रयास करते थे इसके बाद उन्होंने नेशनल मीडिया को अलविदा कहकर अब फुल टाइम समाज सेवा करने का निर्णय लिया है ।

दरम्वाल के समर्थन में भारी संख्या में युवा एकजुट नजर आए युवाओं की भारी संख्या के साथ हनुमान धाम मंदिर के दर्शन के बाद स्थानीय लोगों से मुलाकात करी और जनसंपर्क करते हुए उन्होंने कहा कि रामनगर विधानसभा क्षेत्र में मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए वह लगातार प्रयास कर रहे हैं बहुत सारी समस्याओं का समाधान क्षेत्र में अलग-अलग स्थान पर कर चुके हैं इसमें बिजली , पानी, सड़क समाधान कर चुके हैं और रामनगर अस्पताल को लेकर भी वह लगातार अधिकारियों से वार्ता और विभाग के माध्यम से रामनगर के सरकारी अस्पताल को और बेहतर सुविधाओं के लिए वह लगातार प्रयास कर रहे हैं

राहुल दरम्वाल ने कहा कि रामनगर क्षेत्र के वन ग्रामों के लिए भी वह लगातार प्रयास कर रहे हैं उसके साथ ही सड़क, बिजली ,पानी ,सिंचाई नहरें ,वन्य जानवरों के आबादी क्षेत्र में मानव वन्य जीव संघर्ष को कम करना भी प्राथमिकता है , साथ ही आवारा पशुओं से किसानों की खेती को हो रहे नुकसान को लेकर भी वह प्रयास करेंगे और लगातार गोवंश और अन्य पशुओं के कारण लगातार हादसे हो रहे हैं इन्हें रोकना भी प्राथमिकताओं में बताया ,

बेहतर शिक्षा और युवाओं के लिए रोजगार के साथ ही युवाओं को सही मार्गदर्शन और युवाओं को खेल के प्रति अधिक जागरूक करना है वही अपराध मुक्त और नशा मुक्त रामनगर विधानसभा को बनाने के लिए वह हर संभव कदम उठाएंगे ।

कल्याणिका पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया, नन्हे-मुन्ने बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मोहा मन

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। जिले की जागेश्वर विधानसभा के विकासखंड लमगड़ा स्थित कल्याणिका पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव शनिवार को बाल दिवस के अवसर पर धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियां देकर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविंद सिंह कुंजवाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला पंचायत सदस्य रजनी फर्त्याल ने शिरकत की। विद्यालय के प्रबंधक रमेश बोरा ने सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविंद सिंह कुंजवाल ने बच्चों



को बाल दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शिक्षा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव है। उन्होंने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में भागीदारी भी जरूरी है। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों के प्रयासों की सराहना करते हुए बच्चों को मेहनत और लगन के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।विद्यालय प्रबंधन के अनुसार कल्याणिका पब्लिक स्कूल की शुरुआत वर्ष 2002 में ग्राम कनरा से की गई थी। वर्तमान में विद्यालय लमगड़ा में कक्षा आठ तक संचालित हो रहा है, जिसमें 345 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धियों की बात करें तो अब तक यहां के 48 विद्यार्थी जवाहर नवोदय विद्यालय तथा तीन विद्यार्थी सैनिक स्कूल घोड़ाखाल में चयनित होकर क्षेत्र का नाम रोशन कर चुके हैं।

वार्षिकोत्सव के दौरान बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में अभिभावकों और क्षेत्रीय लोगों ने भी बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना की।

इस मौके पर जिला महामंत्री दीवान सतवाल, ब्लॉक अध्यक्ष मनोज रावत, पूर्व जिला पंचायत सदस्य राजेश अधिकारी, हेम कुमार आर्य, बिशन रावत, नवल रावत, चंदन सिंह बोरा सहित विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, छात्र-छात्राएं, अभिभावक एवं क्षेत्र के जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

पदोन्नति को तरसे फायर कर्मी, मानदेय बढ़ोतरी की राह देख रहे पीआरडी जवान

फायर सर्विस में एएसआई पद सृजित न होने से 20 साल से मुख्य आरक्षी पद पर अटके कर्मचारी

पीआरडी संगठन ने मांगा 365 दिन रोजगार, मूल वेतन और 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता

के.के.पी संवाददाता

चम्पावत। कानून-व्यवस्था और आपदा जैसी परिस्थितियों में अहम भूमिका निभाने वाले फायर सर्विस और प्रांतीय रक्षक दल (पीआरडी) के कर्मचारी इन दिनों अपनी मांगों को लेकर निराश हैं। उत्तर प्रदेश में होमगार्ड और पीआरडी जैसे संगठनों को बेहतर मानदेय और सुविधाएं दी जा रही हैं, जबकि उत्तराखंड में इन कर्मियों की कई मांगें लंबे समय से लंबित हैं।

फायर सर्विस संवर्ग में सहायक उप निरीक्षक (एएसआई) का पद सृजित न होने के कारण कर्मियों को पदोन्नति नहीं मिल पा रही है। हालत यह है कि कई कर्मचारियों को अपने से जूनियर कर्मचारियों के अधीन काम करना पड़ रहा है। सिविल पुलिस में दो वर्ष तक



मुख्य आरक्षी रहने के बाद एएसआई पद पर पदोन्नति मिल जाती है, लेकिन फायर सर्विस में कई कर्मी 20 वर्षों से मुख्य आरक्षी पद पर ही बने हुए हैं। कर्मचारियों का कहना है कि यदि यही व्यवस्था फायर सर्विस में लागू की जाए तो राजकोष पर कोई अतिरिक्त भार नहीं पड़ेगा, क्योंकि उन्हें पहले से वरिष्ठता के आधार पर वेतन मिल रहा है। इससे संबंधित पत्रावली लंबे समय से शासन स्तर पर लंबित है। निराशा के बावजूद फायर कर्मी पूरी निष्ठा से अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं। उधर पीआरडी जवान होमगार्ड की तर्ज पर मूल वेतन के साथ 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता और समान कार्य के लिए समान वेतन की मांग कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने युवा महोत्सव में पीआरडी जवानों को वर्ष में 300 दिन रोजगार देने की बात कही थी, जबकि पीआरडी हित संगठन 365 दिन रोजगार की मांग कर रहा है। संगठन 10 वर्ष की सेवा के बाद अलग होने या सेवानिवृत्त होने पर एकमुश्त धनराशि देने की भी मांग कर रहा है।

पीआरडी हित संगठन के प्रदेश अध्यक्ष संजय सिंह पंवार ने बताया कि संगठन ने 13 अक्टूबर को गृह सचिव और विभागीय मंत्री से प्रतिनिधिमंडल के रूप में मिलने की इच्छा जताई थी, लेकिन अब तक अनुमति नहीं मिली है। इससे जवानों में नाराजगी है और उन्हें लगता है कि उनकी बात मुख्यमंत्री तक नहीं पहुंच पा रही। उन्होंने कहा कि पीआरडी जवान हर तरह की ड्यूटी में पूरी निष्ठा से अपनी भूमिका निभाते हैं।

सरकार ने चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के पद को मृत संवर्ग घोषित कर उनकी जगह पीआरडी जवानों से काम लेना शुरू किया, लेकिन उन्हें चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की तुलना में काफी कम मानदेय मिल रहा है।

संपादकीय

फास्ट फूड और मोबाइल की गिरफ्त में बचपन, डायबिटीज का बढ़ता खतरा

भारत में डायबिटीज की बीमारी केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं रह गई है। बच्चों और युवाओं में भी तेजी से बढ़ते मधुमेह के मामले समाज और स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय बनते जा रहे हैं। कभी जिस उम्र में बच्चे खेल के मैदानों में दौड़ते-कूदते थे, आज उसी उम्र में वे मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम की दुनिया में घंटों व्यस्त रहते हैं। दूसरी ओर खानपान की बदलती आदतों ने इस समस्या को और भी गंभीर बना दिया है। पिछले दो-तीन दशकों में भारतीय परिवारों की जीवनशैली में बड़ा बदलाव आया है। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है। परिवारों में एक या दो बच्चे होने के कारण माता-पिता उनकी हर जिद पूरी करने की कोशिश करते हैं। बच्चों की जिद के सामने फास्ट फूड, पिज्जा, बर्गर, चाउमीन, फ्रेंच फ्राइज, पैकेज्ड स्नैक्स और मीठे पेय पदार्थ आसानी से उपलब्ध करा दिए जाते हैं। धीरे-धीरे यह भोजन बच्चों की पसंद ही नहीं, बल्कि उनकी रोजमर्रा की आदत बन जाता है। फास्ट फूड में अधिक मात्रा में नमक, चीनी, अस्वास्थ्यकर वसा और कैलोरी होती हैं। इनका नियमित सेवन मोटापा, इंसुलिन प्रतिरोध और टाइप-2 डायबिटीज का खतरा बढ़ रहा है। बच्चों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है।

बचपन में विकसित हुई गलत खानपान की आदत के कारण अब कम उम्र में ही शुगर की बीमारी देखने को मिल रही है। जो जीवनभर उनका पीछा नहीं छोड़ेगी। दूसरी बड़ी समस्या शारीरिक गतिविधियों का लगातार कम होना है। पहले बच्चे स्कूल से लौटने के बाद मैदानों में क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो और दूसरे खेल खेलते थे। आज उनका अधिकांश समय मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम में बीत रहा है। शारीरिक श्रम, पैदल चलना, साइकिल चलाना और व्यायाम जीवनशैली से गायब होते जा रहे हैं। मोबाइल फोन और फास्ट फूड दोनों बच्चों और युवाओं के लिए आकर्षण और आदत का ऐसा चक्र बना रहे हैं, जिससे बाहर निकलना उनके लिए कठिन होता जा रहा है। मोबाइल नहीं मिलने पर बच्चों का चिड़चिड़ापन और आक्रामक व्यवहार भी अभिभावकों के लिए चिंता का विषय बन गया है। अनियंत्रित स्क्रीन का इस्तेमाल और अस्वास्थ्यकर खानपान के दुष्परिणामों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। डायबिटीज केवल खानपान और व्यायाम की कमी से ही नहीं होती। कभी-कभी इसके आनुवंशिक कारण, पारिवारिक इतिहास, नींद की कमी, मोटापा और अन्य स्वास्थ्य संबंधी परिस्थितियां भी इसके जोखिम को प्रभावित करती हैं। टाइप-1 डायबिटीज बच्चों में भी हो सकती है। जो खानपान या मोटापे से नहीं होती। इसलिए बीमारी के सभी स्वरूपों को समझना जरूरी है।

इंटरनेशनल डायबिटीज डे के इस अवसर पर यह संकल्प लेना होगा, कि बच्चों को केवल महंगे स्कूल, मोबाइल और आधुनिक सुविधाएं देना ही अभिभावकों की जिम्मेदारी नहीं है। उन्हें स्वस्थ शरीर और स्वस्थ जीवनशैली देना भी उतना ही आवश्यक है। घर में पौष्टिक भोजन, फल, सब्जियां और पारंपरिक खानपान को प्राथमिकता मिले। फास्ट फूड को रोजमर्रा के भोजन का हिस्सा बनाने से बचें। बच्चों को प्रतिदिन कम से कम एक घंटा खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें। स्कूलों में खेल के मैदान, शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। माता-पिता को भी बच्चों के साथ पैदल चलना, खेलना और व्यायाम करना चाहिए। जिससे बच्चों की भी आदत पड़ेगी। मां-बाप का भी स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सवाल यह है कि हम अपने बच्चों को मोबाइल की दुनिया में व्यस्त रखकर उनका बचपन छीन रहे हैं, या उन्हें स्वस्थ भविष्य देने की तैयारी कर रहे हैं? डायबिटीज से बचाव की शुरुआत अस्पताल से नहीं, बल्कि घर की रसोई, भोजन की थाली और खेल के मैदान से होनी चाहिए। आज की छोटी-सी सावधानी आने वाली पीढ़ी को बड़ी बीमारी से बचा सकती है। उनका बेहतर करियर भी बना सकती है। शरीर स्वस्थ रहेगा तो बाकी सभी चीजें ठीक-ठाक रहेंगी।

भारत के आर्थिक विकास में राज्यों को बढ़ानी होगी अपनी हिस्सेदारी

प्रहलाद सबनानी

भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए देश के समस्त राज्यों को देश के आर्थिक विकास में अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी। विशेष रूप से उन राज्यों को, जिनकी आर्थिक विकास दर देश की औसत आर्थिक विकास दर से नीचे है। भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए औसतन 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की आर्थिक विकास दर हासिल करना आवश्यक है।

वर्तमान में जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान सबसे बड़े राज्यों की श्रेणी में गिने जाते हैं। परंतु, 1980 के दशक में इन राज्यों को 'बीमारु' राज्य की संज्ञा दी गई थी, क्योंकि इन राज्यों की जनसंख्या सबसे अधिक थी, भारत के 10 में से 4 नागरिक इन राज्यों में निवास करते थे। साथ ही, इन राज्यों की आर्थिक विकास दर तुलनात्मक रूप से बहुत कम थी जिससे इन राज्यों की प्रति व्यक्ति आय भी बहुत कम थी।

वर्ष 2000-01 में उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कुल योगदान 22 प्रतिशत था जो वर्ष 2034-24 में घटकर 21 प्रतिशत हो गया। पिछले, लगभग 25 वर्षों के दौरान देश के इन चारों बड़े राज्यों का देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान लगभग उसी स्तर पर बना रहा है, जो एक चिन्तनीय विषय होना चाहिए। यदि देश के सबसे बड़े राज्यों का देश के आर्थिक विकास में योगदान नहीं बढ़ेगा तो भारत एक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में किस प्रकार शामिल हो सकता है। अतः उक्त बड़े चारों राज्यों को अपने आर्थिक विकास को गति देना अब एक आवश्यक आवश्यकता बन गया है।

वर्ष 2024-25 के प्रति व्यक्ति आय (नस्ष्ठब्क) के आंकड़ों पर यदि नजर डालें तो ध्यान में आता है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय का स्तर 234,859 रुपए प्रतिवर्ष था। जबकि बिहार में प्रति व्यक्ति आय 76,000 रुपए प्रतिवर्ष थी, उत्तर प्रदेश में यह 126,304 रुपए थी, मध्य प्रदेश में 170,320 रुपए थी एवं राजस्थान में 206,440 रुपए थी। भारत में प्रति व्यक्ति आय बिहार में प्रति व्यक्ति आय की तुलना में तीन गुणा अधिक है। जबकि उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय की तुलना में भी भारत में प्रति व्यक्ति आय लगभग दोगुनी है। मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में प्रति व्यक्ति आय की तुलना में भी भारत में प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है। पूरे भारत में बेरोजगारी की दर 5.1 प्रतिशत है जबकि, राजस्थान में 7.7 प्रतिशत एवं बिहार में 7.3 प्रतिशत है। विशेष रूप से बिहार एवं उत्तर प्रदेश से रोजगार पाने के उद्देश्य से नागरिकों का देश के अन्य प्रदेशों में पलायन 37 प्रतिशत है। अर्थात, पूरे देश में एक राज्य से दूसरे राज्यों में होने वाले नागरिकों के पलायन का 37 प्रतिशत हिस्सा केवल बिहार एवं उत्तर प्रदेश का होता है। क्योंकि, इन राज्यों में रोजगार के पर्याप्त अवसर निर्मित नहीं हो रहे हैं एवं इन प्रदेशों के नागरिक मजबूरी में अन्य राज्यों को पलायन करते हैं ताकि उन्हें अन्य राज्यों में रोजगार प्राप्त हो सके। उक्त कारणों के चलते ही, उक्त चारो राज्यों को 'बीमारु' राज्यों की संज्ञा दी गई थी। परंतु, हाल ही के समय में इन राज्यों में, विशेष रूप से, आर्थिक क्षेत्र में, परिस्थितियां तेजी से बदल रही हैं।

बिरसा मुंडा: क्रांतिकारी, समाज-सुधारक और जन-आस्था के भगवान

ललित गर्ग

किसी महापुरुष का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं किया जाता कि उसने अपने समय में कितनी लोकप्रियता अर्जित की, बल्कि इस आधार पर किया जाता है कि उसने अपने समाज की पीड़ा को कितनी गहराई से समझा, अन्याय के विरुद्ध कितनी निर्भीकता से खड़ा हुआ और आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसी चेतना छोड़ी। इस कसौटी पर बिरसा मुंडा भारतीय इतिहास के उन विलक्षण नायकों में दिखाई देते हैं, जिनका जीवन छोटा था, लेकिन संघर्ष विराट। मात्र लगभग 25 वर्ष की आयु में उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य, जमींदारी शोषण, महाजनी व्यवस्था, सामाजिक कुरीतियों और सांस्कृतिक दासता के विरुद्ध ऐसी चेतना जगाई, जिसने उन्हें केवल आदिवासी नायक नहीं, बल्कि भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के अग्रणी जननायकों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। आदिवासी अस्मिता, स्वतंत्रता-संग्राम, जल-जंगल-जमीन और आध्यात्मिक आस्था के प्रतीक ऊलगुलान यानी बिरसा मुंडा के संघर्ष और स्वतंत्रता की चेतना ने भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्हें धरती आबा और बिरसा भगवान के रूप में पूजा जाता है। उनका संघर्ष केवल अंग्रेजों से मुक्ति का नहीं, अस्मिता, स्वाभिमान और स्वराज का महासंग्राम था

15 नवंबर 1875 को झारखंड के उलिहातु में जन्मे बिरसा मुंडा का जीवन उस भारत की कहानी है, जिसे औपनिवेशिक सत्ता केवल राजस्व और संसाधनों की दृष्टि से देखती थी। आदिवासी के लिए जंगल केवल जंगल नहीं था, जमीन केवल जमीन नहीं थी और नदी केवल पानी का स्रोत नहीं थी। वह उसकी जीवन-पद्धति, संस्कृति, आस्था और अस्तित्व का आधार थी। अंग्रेजी शासन और उससे जुड़ी जमींदारी-महाजनी व्यवस्था ने जब इस जीवन-दर्शन को चुनौती दी, तब बिरसा के भीतर विद्रोह जन्मा। यहीं बिरसा मुंडा के संघर्ष को देखने का एक नया दृष्टिकोण सामने आता है। उनका आंदोलन केवल अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का राजनीतिक आंदोलन नहीं था। वह उससे कहीं अधिक व्यापक था। वह पूछ रहा था-किसका जंगल? किसकी जमीन? किसका शासन? किसकी संस्कृति? और किसके अधिकार? यही प्रश्न आगे चलकर उनके प्रसिद्ध 'ऊलगुलान', अर्थात् महान जनविद्रोह, की आत्मा बने।

बिरसा ने महसूस किया कि किसी समाज को केवल बाहरी सत्ता नहीं गुलाम बनाती, उसके भीतर की कमजोरियां भी उसे कमजोर करती हैं। इसलिए उन्होंने तलवार से पहले चरित्र और चेतना को अपना हथियार बनाया। उन्होंने आदिवासी समाज में फैली अंधविश्वासपूर्ण प्रवृत्तियों, नशे, सामाजिक बुराइयों और रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने लोगों को अपने धर्म, संस्कृति और परंपराओं के प्रति जागरूक किया। हिंसा और नशे से दूर रहने, नैतिक जीवन जीने और सामूहिक एकता बनाए रखने की प्रेरणा दी। इस अर्थ में बिरसा केवल क्रांतिकारी नहीं थे, वे समाज के भीतर से समाज को बदलने वाले सुधारक भी थे। उन्होंने समझ लिया था कि जिस समाज के भीतर आत्मविश्वास मर जाता है, वह बाहरी शोषण का प्रतिरोध लंबे समय तक नहीं कर सकता। इसलिए उन्होंने पहले आदिवासी समाज में आत्मसम्मान जगाया और फिर उसे अंग्रेजी सत्ता के सामने खड़ा किया। उनका संघर्ष किसानों और आदिवासियों के उस अधिकार के लिए था जिसे औपनिवेशिक व्यवस्था ने धीरे-धीरे छीन लिया था। महाजन कर्ज देते और बदले में जमीन पर कब्जा कर लेते। जमींदारी व्यवस्था शोषण को संस्थागत रूप देती। अंग्रेजी कानून आदिवासी जीवन-पद्धति के अनुकूल नहीं थे। बिरसा ने इस पूरी व्यवस्था को चुनौती दी। उनके लिए स्वराज का अर्थ केवल सत्ता परिवर्तन नहीं था; स्वराज का अर्थ था अपनी जमीन पर अपना अधिकार, अपनी संस्कृति पर अपना अधिकार और अपने जीवन पर अपना निर्णय।

यही कारण है कि बिरसा का 'ऊलगुलान' इतिहास में एक असाधारण घटना बन गया। 1895 से 1900 के बीच उनका प्रभाव तेजी से बढ़ा। अंग्रेजी शासन ने उनके आंदोलन को अपने लिए गंभीर खतरे के रूप में देखा। गिरफ्तारियां हुईं, दमन हुआ, गोलियां चलीं, लेकिन आंदोलन की चेतना को कैद नहीं किया जा सका। जनवरी 1900 में डोमबाड़ी पहाड़ी की घटना ने संघर्ष को और उग्र रूप दिया। अंततः बिरसा मुंडा 3 फरवरी 1900 को गिरफ्तार हुए और 9 जून 1900 को रांची जेल में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु ने उनके शरीर को समाप्त किया, लेकिन बिरसा को इतिहास से मिटाने की अंग्रेजों की कोशिश विफल हो गई। लोकगीतों, कथाओं, स्मृतियों और आदिवासी चेतना में वे जीवित रहे। यही किसी महापुरुष की वास्तविक विजय होती है-जब व्यक्ति चला जाता है, लेकिन उसका विचार समाज की सामूहिक चेतना बन जाता है। और यहीं बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व का सबसे अद्भुत पक्ष सामने आता है-वे आदिवासी समाज के लिए केवल नायक नहीं रहे, 'भगवान' बन गए। झारखंड और आसपास के क्षेत्रों में उन्हें श्रद्धा से 'बिरसा भगवान' और 'धरती आबा' कहा जाता है। यह केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है। इसके पीछे उस समाज की गहरी कृतज्ञता है, जिसने बिरसा में अपने अस्तित्व की रक्षा करने वाले मसीहा को देखा। जिस व्यक्ति ने उनकी धरती, संस्कृति, सम्मान और अधिकार के लिए अपना जीवन न्योछावर किया, वह उनके लिए देवतुल्य हो गया।

आज बिरसा मुंडा को राष्ट्रीय स्मृति में जिस व्यापकता से प्रतिष्ठा मिली है, उसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री मोदी ने बिरसा को केवल आदिवासी समुदाय के नायक के रूप में नहीं, बल्कि पूरे भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय अस्मिता के नायक के रूप में जन-जन तक पहुंचाया। 2021 में 15 नवंबर को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा इसी राष्ट्रीय पुनर्स्मरण का महत्वपूर्ण पड़ाव बनी। 2024 से 2025 तक बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर देशभर में जनजातीय गौरव वर्ष के कार्यक्रम हुए। 2024 में प्रधानमंत्री ने बिहार के जमुई में स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी किया तथा जनजातीय क्षेत्रों के विकास से जुड़े अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत की। 2025 में उनकी 150वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री ने गुजरात के डेडियापाड़ा में फिर बिरसा मुंडा को राष्ट्रीय श्रद्धांजलि दी और कहा कि भारत की स्वतंत्रता, सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा में जनजातीय समाज अग्रिम पंक्ति में रहा है। च्तमे प्दवितउंजपवद ठनतमंन

मोदी द्वारा बिरसा मुंडा को राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में लाने का महत्व केवल इतना नहीं कि एक महान आदिवासी नायक को उचित सम्मान मिला। इससे भारतीय इतिहास को देखने का दृष्टिकोण भी व्यापक हुआ है। अब स्वतंत्रता संग्राम की कथा केवल दिल्ली, मुंबई, कोलकाता या बड़े राजनीतिक केंद्रों की कथा नहीं रही; उसमें जंगलों, पहाड़ों और आदिवासी अंचलों के उन असंख्य संघर्षों को भी स्थान मिल रहा है, जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। सरकार ने जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के इतिहास और संस्कृति को संरक्षित करने के लिए संग्रहालयों सहित अनेक पहल भी की हैं। बिरसा मुंडा की प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि आज विकास और पर्यावरण के प्रश्नों के बीच जल, जंगल और जमीन का सवाल फिर हमारे सामने है।

भारतीय संस्कृति का सबसे ईको-फ्रैंडली उत्सव है छठ महापर्व

योगेश कुमार गोयल

भारत की सांस्कृतिक धारा में यदि कोई पर्व जीवन, प्रकृति और आस्था के त्रिवेणी संगम का प्रतीक है तो निसंदेह वह है 'छठ' महापर्व। दीवाली की जगमगाहट के तुरंत बाद आरंभ होने वाला यह चार दिवसीय अनुष्ठान न केवल सूर्य उपासना का पर्व है बल्कि मानवीय श्रद्धा, पर्यावरणीय संतुलन और आत्मशुद्धि का जीवंत प्रतीक भी है। 'छठ' पर्व को लोक परंपरा, अध्यात्म और वैज्ञानिकता का अद्भुत संगम भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। चार दिनों तक चलने वाला यह अनुष्ठान केवल धार्मिक ही नहीं, मानव और प्रकृति के बीच गहन सामंजस्य का प्रतीक है। छठ पर्व का आरंभ 13 नवंबर को 'नहाय-खाय' से हुआ है। इस दिन छठ व्रती स्नान कर अपने शरीर और मन को पवित्र करते हैं तथा सात्विक भोजन बनाकर ग्रहण करते हैं। भोजन सामान्यतः चने की दाल, कद्दू की सब्जी और अरवा चावल का होता है, जिसे बिना लहसुन-प्याज के पकाया जाता है। यह दिन आत्मशुद्धि का प्रतीक है, जब व्यक्ति अपने जीवन से अशुद्धता, पाखंड और आलस्य को दूर करता है। इसी दिन व्रती छठी मइया का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लेते हैं और सूर्योपासना की यात्रा आरंभ होती है। इस दिन पूरे परिवेश में शुद्धता, संयम और सादगी की पवित्र गंध फैल जाती है। 14 नवंबर को छठ पर्व का दूसरा चरण 'खरना' मनाया गया। इस दिन व्रती पूरे दिन निर्जल व्रत रखते हैं और शाम को स्नान-ध्यान कर मिट्टी के चूल्हे पर खीर, रोटी और फल का प्रसाद बनाते हैं। यह प्रसाद छठी मइया को अर्पित करने के बाद घर-परिवार और पड़ोसियों में बांटा जाता है। मान्यता है कि खरना का प्रसाद ग्रहण करने से मन की नकारात्मकता मिट जाती है और जीवन में समृद्धि का प्रकाश फैलता है। खरना की संध्या अपने आप में अत्यंत मनोहारी होती है, जहां दीपक की लौ, भक्ति-गीतों की ध्वनि और गुड़-खीर की सुगंध मिलकर आस्था का ऐसा वातावरण रचती है, जो आत्मा को भी निर्मल कर देती है। 15 नवंबर को छठ व्रती अस्ताचलगामी भगवान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करेंगे। यह दृश्य भारतीय लोकसंस्कृति की सबसे सुंदर छवियों में से एक है। नदी, सरोवर या तालाब के तट पर सैंकड़ों व्रती रंग-बिरंगे वस्त्रों में जल में खड़े होकर सूर्य को जल चढ़ाते हैं। उनके संग गूंजते छठ गीत 'कांच ही बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए' आस्था के स्वर को आसमान तक पहुंचा देते हैं। संध्या अर्घ्य केवल सूर्य को जल चढ़ाने का अनुष्ठान नहीं बल्कि कृतज्ञता का प्रतीक है। इस अर्घ्य में मानव अपने जीवन की समृद्धि, संतान की रक्षा और परिवार के कल्याण के लिए सूर्य को धन्यवाद ज्ञापित करता है। ढ़लते सूर्य को अर्घ्य देने का अर्थ है, विनम्रता से यह स्वीकार करना कि हर अंत में एक नई शुरुआत छिपी होती है। छठ महापर्व का समापन 16 नवंबर को प्रातःकालीन अर्घ्य के साथ होगा। यह वह क्षण होता है, जब अंधकार के बाद पहली किरण उषा का रूप लेकर जल पर नृत्य करती है और व्रती हाथ जोड़कर सूर्य को नमन करते हैं। उगते सूर्य को अर्घ्य देना आशा, ऊर्जा और जीवन के पुनरुत्थान का प्रतीक है। परिवार के सदस्य दूध और जल से अर्घ्य अर्पित करते हैं, मंगलकामनाएं करते हैं और इसके साथ ही छठ व्रत का पारण कर चार दिवसीय अनुष्ठान पूर्ण करते हैं। छठ महापर्व का इतिहास और इसकी धार्मिक गहराई भारतीय सभ्यता जितनी ही पुरानी है। मान्यता है कि छठी मइया, जिन्हें षष्ठी देवी या कात्यायनी देवी भी कहा जाता है, सूर्य देव की बहन हैं। कहा जाता है कि वे संतानों की रक्षा करती हैं और उन्हें दीर्घायु बनाती हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार, प्राचीन काल में राजा प्रियव्रत और रानी मालिनी के पुत्र नहीं था। महर्षि कश्यप के निर्देशानुसार उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ किया लेकिन प्राप्त शिशु मृत पैदा हुआ। दुखी राजा ने प्राण त्यागने का निश्चय किया, तभी देवी षष्ठी प्रकट हुईं और उन्होंने कहा, 'मैं सृष्टि की छठी शक्ति हूं। यदि तुम मेरी पूजा करोगे तो तुम्हें पुत्र प्राप्त होगा।' राजा ने कार्तिक शुक्ल षष्ठी को व्रत किया और उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ। तभी से छठ व्रत का प्रचलन आरंभ हुआ। महाभारत काल में भी छठ पूजा का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि द्रौपदी ने श्रीकृष्ण के निर्देश पर सूर्य की आराधना कर पाण्डवों की मनोकामनाएं पूर्ण की। वहीं सूर्यपुत्र कर्ण प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य देकर उनकी कृपा से महान योद्धा बने। देवमाता अदिति ने भी असुरों से देवताओं की रक्षा के लिए छठी मइया की पूजा की थी। इसीलिए छठ केवल एक पूजा नहीं बल्कि युगों से चली आ रही ऊर्जा की साधना है, सूर्य से जीवन लेने और उसी को आभार स्वरूप अर्पण करने की परंपरा। छठ पर्व का सबसे बड़ा संदेश है प्रकृति और जलस्रोतों की पवित्रता। इस दिन पूजा हमेशा साफ-सुथरे जलस्रोतों, नदियों, तालाबों या घाटों के किनारे की जाती है। व्रती स्वयं और समाज मिलकर इन जलाशयों की सफाई करते हैं, उन्हें सजाते हैं और जल को प्रदूषण से मुक्त रखने का संकल्प लेते हैं। पर्यावरणविदों के अनुसार, छठ पर्व भारतीय संस्कृति का सबसे ईको-फ्रैंडली उत्सव है। इसमें न कृत्रिम सजावट होती है, न प्लास्टिक का प्रयोग। प्रसाद मिट्टी के बर्तनों में, टोकरी बांस की और दीपक मिट्टी के बनते हैं। यह त्योहार हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति वही है, जो प्रकृति का सम्मान करते हुए की जाए। छठ पर्व में लोकगीतों की मधुरता, लोकनृत्यों की लय और सामूहिकता की भावना भारतीय लोकसंस्कृति की आत्मा है। हर घाट पर महिलाएं छठी मइया के गीत गाती हैं, पुरुष सजावट में सहयोग करते हैं, बच्चे दीपों की रोशनी में खेलते हैं। हर आंगन, हर घाट, हर गीत में भक्ति की ऐसी लहर होती है, जो समाज के हर वर्ग को जोड़ती है।

यह पर्व दिखाता है कि सच्ची आस्था केवल मंदिरों में नहीं बल्कि एक-दूसरे के साथ साझा किए गए प्रेम, सहयोग और शुद्धता में निहित है। सूर्य की उपासना केवल धार्मिक कर्म नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी गहन महत्व रखती है। सूर्य प्रकाश और ऊर्जा का शाश्वत स्रोत है। उगते और ढ़लते सूर्य को अर्घ्य देने का समय वास्तव में मानव शरीर के लिए सबसे अधिक लाभकारी माना गया है। उस समय की धूप शरीर में विटामिन डी के उत्पादन और मानसिक शांति में सहायक होती है। जल में खड़े होकर अर्घ्य देना शरीर की शुद्धि और एकाग्रता दोनों को संतुलित करता है। इस प्रकार छठ पूजा अध्यात्म और विज्ञान का अद्भुत संगम है। छठ प्रसाद में गुड़, चावल, फल, ठेकुआ और नारियल होते हैं। हर वस्तु का अपना प्रतीकात्मक अर्थ है। गुड़ पवित्रता का, फल समृद्धि का और ठेकुआ परिश्रम का। बांस की टोकरी में सजाया गया यह प्रसाद जब घाट पर अर्पित होता है तो लगता है मानो पूरी प्रकृति (सूर्य, जल, वायु और धरती) को अर्पण किया जा रहा हो। छठ महापर्व केवल पूजा या व्रत का प्रतीक नहीं है बल्कि यह जीवन का एक दर्शनशास्त्र है कि मनुष्य प्रकृति का अभिन्न अंग है और उसकी पवित्रता में ही जीवन की निरंतरता है। जब कार्तिक की ठंडी हवा में घाटों पर दीपक झिलमिलाते हैं, जब महिलाओं के स्वर में छठ गीत गूंजते हैं और जल में सूर्य की किरणें सोने-सी चमकती हैं, तब लगता है मानो सृष्टि और साधना एकाकार हो गए हों।

भजन क्लबिंग: भक्ति की क्लब संस्कृति की नई दस्तक

ललित गर्ग

अध्यात्म अब केवल उम्र के आखिरी पड़ाव की चीज नहीं रहा। वह युवाओं की धड़कनों में शामिल हो रहा है। डिजिटल युग की भागदौड़, अकेलेपन, तनाव और निरंतर स्क्रीन-उपस्थिति के बीच नई पीढ़ी भक्ति के ऐसे रूप तलाश रही है, जो उसके जीवन की गति और उसकी अभिव्यक्ति से जुड़ सकें। इसी बदलते सामाजिक परिदृश्य में 'भजन क्लबिंग' एक नई और रोचक सांस्कृतिक प्रवृत्ति के रूप में सामने आई है। भजन क्लबिंग का अर्थ है-भजन, कीर्तन और भक्ति-संगीत को पारंपरिक धार्मिक आयोजन की सीमाओं से बाहर निकालकर ऐसे सामूहिक वातावरण में प्रस्तुत करना, जहाँ युवा गाते हैं, झूमते हैं, नृत्य करते हैं और संगीत की लय में स्वयं को विसर्जित करते हैं। वातावरण में आधुनिक संगीत की ऊर्जा होती है, लेकिन केंद्र में भक्ति रहती है। इसे एक तरह से क्लब की ऊर्जा और सत्संग की आत्मीयता का संगम कहा जा सकता है। यह बदलाव इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि लंबे समय से यह धारणा रही है कि धर्म और अध्यात्म वृद्ध पीढ़ी के विषय हैं। नई पीढ़ी आधुनिकता, तर्क और तकनीक के साथ आगे बढ़ते हुए धार्मिक अनुष्ठानों से दूरी बना रही है। लेकिन भजन क्लबिंग का उभार इस धारणा को चुनौती देता दिखाई दे रहा है। युवा यह कह रहे हैं कि आध्यात्मिकता चाहिए, लेकिन उसकी अभिव्यक्ति उनकी भाषा और उनके समय के अनुरूप भी हो सकती है।

भारत में क्लब संस्कृति का विकास मुख्यतः मनोरंजन, संगीत, नृत्य और सामाजिक मेल-जोल के माध्यम के रूप में हुआ। देर रात तक चलने वाले कार्यक्रमों में तेज संगीत, चमकती रोशनी और आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव दिखाई देता रहा। अब उसी सामाजिक ढाँचे में भक्ति का प्रवेश अपने आप में सांस्कृतिक परिवर्तन का संकेत है। भजन क्लबिंग में सामान्यतः शराब, धूम्रपान और नशीले पदार्थों के स्थान पर भक्ति-संगीत, सामूहिक गायन और सकारात्मक ऊर्जा को महत्व दिया जाता है। यह अंतर बहुत महत्वपूर्ण है। युवा यदि रात के समय मनोरंजन के लिए बाहर निकलते हैं तो उन्हें ऐसा विकल्प मिलना, जहाँ आनंद के साथ आत्मिक जुड़ाव भी हो, निश्चित रूप से विचारणीय है। इसमें एक और महत्वपूर्ण पक्ष है-सामूहिकता। सोशल मीडिया ने लोगों को आभासी रूप से जोड़ दिया है, लेकिन वास्तविक जीवन में अकेलापन बढ़ा है। हजारों डिजिटल मित्रों के बावजूद मनुष्य कई बार स्वयं को अकेला पाता है। भजन क्लब में अनजान लोग भी एक स्वर में गाते हैं। कुछ समय के लिए मोबाइल दूर होता है और मनुष्य मनुष्य के निकट आता है। यह अनुभव मानसिक स्तर पर भी राहत दे सकता है।

आज का युवा केवल उपदेश सुनना नहीं चाहता, वह अनुभव करना चाहता है। वह किसी बात को इसलिए स्वीकार नहीं करता कि परंपरा ऐसा कहती है। वह जानना चाहता है-इससे मुझे क्या मिलेगा? भजन क्लबिंग इसी प्रश्न का एक व्यावहारिक उत्तर देती प्रतीत होती है। संगीत मनुष्य की भावनाओं को सीधे प्रभावित करता है। सामूहिक गायन में व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीमाओं से ऊपर उठकर समूह का हिस्सा बन जाता है। जब सैकड़ों लोग एक साथ 'राम', 'महावीर', 'शिव', 'कृष्ण' या किसी अन्य आराध्य का स्मरण करते हैं तो वातावरण में सामूहिक ऊर्जा पैदा होती है। जैन दृष्टि से देखें तो भक्ति का मूल उद्देश्य केवल बाहरी उल्लास नहीं, बल्कि आत्मा की ओर यात्रा है। नवकार मंत्र, स्तवन, भक्तामर, मंगल पाठ या तीर्थंकरों की स्तुति यदि संगीत के माध्यम से युवा मन तक पहुँचती है तो यह स्वागतयोग्य प्रयोग हो सकता है-बशर्ते भक्ति मनोरंजन में विलीन न हो जाए। यहीं इस पूरी प्रवृत्ति की सबसे बड़ी कसौटी है। भारत के सार्वजनिक जीवन में भी पिछले कुछ वर्षों में आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक चेतना की सार्वजनिक अभिव्यक्ति अधिक दिखाई देने लगी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित अनेक राष्ट्रीय नेता और सार्वजनिक व्यक्तित्व भारतीय परंपरा, योग, ध्यान, मंदिरों, तीर्थों, भक्ति और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े कार्यक्रमों में सक्रिय दिखाई देते हैं। इससे नई पीढ़ी के बीच यह संदेश गया है कि आधुनिकता और आध्यात्मिकता परस्पर विरोधी नहीं हैं। लेकिन यहाँ यह भी समझना होगा कि किसी राजनीतिक या लोकप्रिय व्यक्तित्व की उपस्थिति किसी आध्यात्मिक प्रवृत्ति की सफलता का अंतिम प्रमाण नहीं हो सकती। किसी भी आंदोलन की वास्तविक शक्ति उसके चरित्र-निर्माण और सामाजिक प्रभाव में होती है। यदि भजन क्लबिंग युवाओं को नशे से दूर करती है, मानसिक तनाव कम करती है, परिवार से जोड़ती है, सेवा की प्रेरणा देती है और जीवन में संयम पैदा करती है, तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

हर नई लोकप्रिय प्रवृत्ति के साथ कुछ जोखिम भी जुड़े होते हैं। सबसे बड़ा खतरा यह है कि भक्ति धीरे-धीरे केवल एक फैशनेबल इवेंट बनकर रह जाए। यदि उद्देश्य आत्मिक शांति के बजाय केवल तेज संगीत, रोशनी, नृत्य और मनोरंजन रह गया तो भजन क्लबिंग और सामान्य क्लब संस्कृति के बीच अंतर धीरे-धीरे समाप्त हो सकता है। दूसरा खतरा व्यावसायीकरण का है। यदि भक्ति के नाम पर महंगे टिकट, प्रायोजक, ब्रांडिंग और दिखावे की संस्कृति हावी हो गई तो आध्यात्मिकता बाजार की वस्तु बन सकती है। तीसरा खतरा किसी व्यक्ति, समूह या शैली के प्रति अंधानुकरण का है। समुदाय बनाना अच्छी बात है, लेकिन समुदाय यदि विचार-विमर्श के बजाय अंध-समर्पण पैदा करने लगे तो वह स्वस्थ आध्यात्मिकता नहीं रह जाता। चौथा प्रश्न संगीत की तीव्रता का है। आध्यात्मिकता का अर्थ हमेशा धीमा संगीत नहीं है और तेज संगीत अपने आप में आध्यात्मिकता-विरोधी भी नहीं है। भक्ति परंपरा में नृत्य, कीर्तन और उत्सव का अपना स्थान रहा है। लेकिन यदि ध्वनि इतनी तीव्र हो जाए कि मन भीतर की ओर जाने के बजाय उत्तेजना में उलझ जाए, तो मूल उद्देश्य कमजोर पड़ सकता है। इस पूरी बहस का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यही है कि अध्यात्म बाहरी अभिव्यक्ति से आगे की यात्रा है। भजन क्लब में दो घंटे झूमना अच्छी अनुभूति दे सकता है, लेकिन उसका वास्तविक मूल्य तब होगा जब उस अनुभव का असर अगले दिन के जीवन में दिखाई दे। प्रश्न है कि इस भजन-संस्कृति में डूबने से क्

सर्दियों में बच्चों को रहता है इन 4 बीमारियों का खतरा, ऐसे करें बचाव



ठंड के इस मौसम में इम्यूनिटी कमजोर होने लगती है। इम्यूनिटी कमजोर होने के कारण शरीर वायरल समस्याओं से बहुत ही जल्दी घिरता है। खासतौर पर छोटे बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर ही रहती है। ऐसे में बच्चों को कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं से इस मौसम में जूझना पड़ता है। सर्दियों में बच्चों को सांस से जुड़ी समस्याएं भी बहुत ही जल्दी परेशान करती हैं इसके कारण बच्चों के गले में खराश, नाक बहना और सर्दी खांसी जैसे लक्षण आम होते हैं। कुछ बच्चों को थकान और सुस्ती भी इसके कारण महसूस होती है।

निमोनिया

इस समस्या के कारण बच्चे सर्दियों में परेशान हो सकते हैं। यह बीमारी बच्चों में सर्दियों में ज्यादा देखने को मिलती है। यह सांस से जुड़ी एक ऐसी समस्या है जो फेफड़ों को प्रभावित करती है। इस स्थिति में बच्चों को सांस लेने में परेशानी होती है। यह बैक्टीरिया या फिर कवक के कारण हो सकता है। निमोनिया बच्चों को सर्दियों में ज्यादा परेशान करता है हालांकि यह व्यस्कों को भी हो सकता है।

साइनस

यह समस्या हर उम्र के लोगों के देखने में मिलती है। बच्चों को साइनस हो सकता है। इस समस्या में नाक और आंख के पीछे हवा से भरी थैलियों में द्रवा जमा हो जाता है जिससे संक्रमण का खतरा रहता है। बच्चों को साइनस होने के कारण सिरदर्द, बुखार, सर्दी-जुकाम जैसे लक्षण भी दिखते हैं। यदि आपके बच्चों को साइनस की बीमारी है तो सर्दियों में आपको उनका ज्यादा ध्यान रखने की जरुरत होती है।

अस्थमा

यह बीमारी सर्दियों में ज्यादा बढ़ती हैं। बच्चों को भी अस्थमा हो सकता है। यह बीमारी फेफड़ों को वायुमार्ग को संकरा कर देता हैं। इससे बच्चों को सांस लेने में दिक्कत हो सकती है। इसके कारण बच्चों को सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। इससे कफ की समस्या भी होती है और बच्चों को घबराहट भी हो सकती है। ऐसे में सर्दी के मौसम में आपको बच्चों की धूल-मिट्टी और प्रदूषण से बचाना चाहिए।

ब्रोंकियोलाइटिस

यदि सर्दियों में आपके बच्चे को बार-बार सर्दी-खांसी होती है तो यह ब्रोंकियोलाइटिस का संकेत भी हो सकता है। यह शिशुओं और बच्चों को प्रभावित करने वाली बीमारी हो जो फेफड़ों में वायुमार्ग में सूजन का कारण बन सकता है। यह एक संक्रामक बीमारी है जो खांसी या छींक के माध्यम से निकलने वाली बूंदों के संपर्क में आने से फैलता है। इस स्थिति में बच्चों को नाक बहना, बुखार या फिर सीने में घरघराहट जैसे लक्षणों का सामना भी करना पड़ सकता है।



बच्चों का कैसे करें बचाव?

.सांस की बीमारियों से बच्चों को बचाने के लिए हाइजीन का खास ध्यान रखें।
.खाना खाने से पहले बच्चों के हाथ साबुन से धुलाएं।
. यदि बच्चों को खांसी हो रही है तो खांसते हुए और छींकते हुए मुंह ढकने के लिए कहें।
.ठंड से बचाने के लिए बच्चों को पूरे कपड़े पहनाएं। बच्चों को दस्ताने और मास्क भी जरुर पहनाएं।
.भीड़-भाड़ वाली जगहों पर बच्चों को न जाने दें।
.बच्चे के खान-पान का ध्यान रखें।

शरीर को गरम रखें

अक्सर बच्चों को ठंड लगने की वजह से, वे बुखार और खांसी-जुकाम का शिकार हो सकते हैं। इसलिए उन्हें अच्छे से कपड़े पहना कर रखें। अक्सर बच्चे जुराब और टोपी नहीं पहनते, जिस वजह से उन्हें ठंड लग जाती है। इसलिए कोशिश करें कि उन्हें ठीक से कपड़े पहनाएं और ठंड से बचा कर रखें।

हाइजीन का ध्यान रखें

सर्दियों के मौसम में अक्सर बच्चे ठंड की वजह से अपनी हाइजीन का ख्याल नहीं रखते। वे गंदे हाथों से अपने मुंह और नाक को छूते हैं, जिस वजह से, वे आसानी से वायरस और बैक्टीरिया की चपेट में आ सकते हैं। इसलिए बच्चों को हाइजीन का महत्व समझाएं और हमेशा बाहर से आने के बाद अच्छे से साबुन से हाथों को धोने की सलाह दें और गंदे हाथों से मुंह न छूने दें।



संतुलित आहार खिलाएं

पोषक तत्वों की कमी की वजह से बच्चों का इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है और वे बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। इसलिए अपने बच्चों की डाइट का खास ख्याल रखें। उन्हें संतुलित आहार दें।

बीमार लोगों से दूर रखें

सर्दी और जुकाम ऐसी बीमारियां हैं, जो बीमार व्यक्ति से स्वस्थ व्यक्तियों में फैल सकता है। ऐसे में बच्चे उनका आसान शिकार हो सकते हैं। इसलिए अपने बच्चों को बीमार व्यक्तियों के पास न जाने दें।

छींकते वक्त मुंह ढकें

छींकते और खांसते वक्त हवा में मुंह और नाक से ड्रॉपलेट्स आते हैं, जिनकी वजह से इन्फेक्शन फैल सकता है। इसलिए बच्चों में आदत डालें कि हमेशा छींकते या खांसते वक्त अपने मुंह और नाक को रुमाल या कोहनी से ढकें, ताकि वायरस और बैक्टीरिया हवा में न फाइलें।

पानी की कमी न होने दें

पानी की कमी की वजह से म्यूकस लाइनिंग मोटी होने लगती है, जिस वजह से रेस्पिरेशन में तकलीफ हो सकती है और बलगम इकट्ठा हो सकता है। इसलिए बच्चों को भरपूर मात्रा में पानी पिलाएं, ताकि म्यूकस की परत मोटी न हो।

एआई के जमाने में टिके रहने के लिए हर पैरेंट अपने टीनेज बच्चों को सिखाएं ये 3 स्किल्स



आज की दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) इतनी तेज़ी से बढ़ रही है कि आने वाले कुछ सालों में कई नौकरियां पूरी तरह बदल जाएंगी। ऐसे में माता-पिता के लिए ज़रूरी है कि वे अपने बच्चों को सिर्फ़ अच्छे मार्क्स नहीं, बल्कि ऐसी स्किल्स सिखाएं जो मशीनें नहीं सीख सकतीं। जानिए 3 ज़रूरी जॉब स्किल्स जो हर पैरेंट को अपने टीनेज बच्चों को सिखानी चाहिए, ताकि वे भविष्य के करियर में सफल रह सकें।

क्रिटिकल थिंकिंग – सोचने और सवाल करने की कला

एआई डेटा से फैसले ले सकता है, लेकिन सोचने, तर्क करने और सही-गलत समझने की क्षमता सिर्फ इंसानों के पास होती है।बच्चों को सिखाएँ कि वे हर जानकारी पर आंख मूंदकर भरोसा न करें, खुद से सवाल करें जैसे- क्यों?, कैसे?,क्या इसका और कोई तरीका हो सकता है? किसी समस्या को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखें। उन्हें समाचारों या सोशल मीडिया पोस्ट पर चर्चा करने को कहें और तर्क पूछें 'तुम्हें क्यों लगता है ये सही है?'

कम्युनिकेशन और इमोशनल इंटेलिजेंस

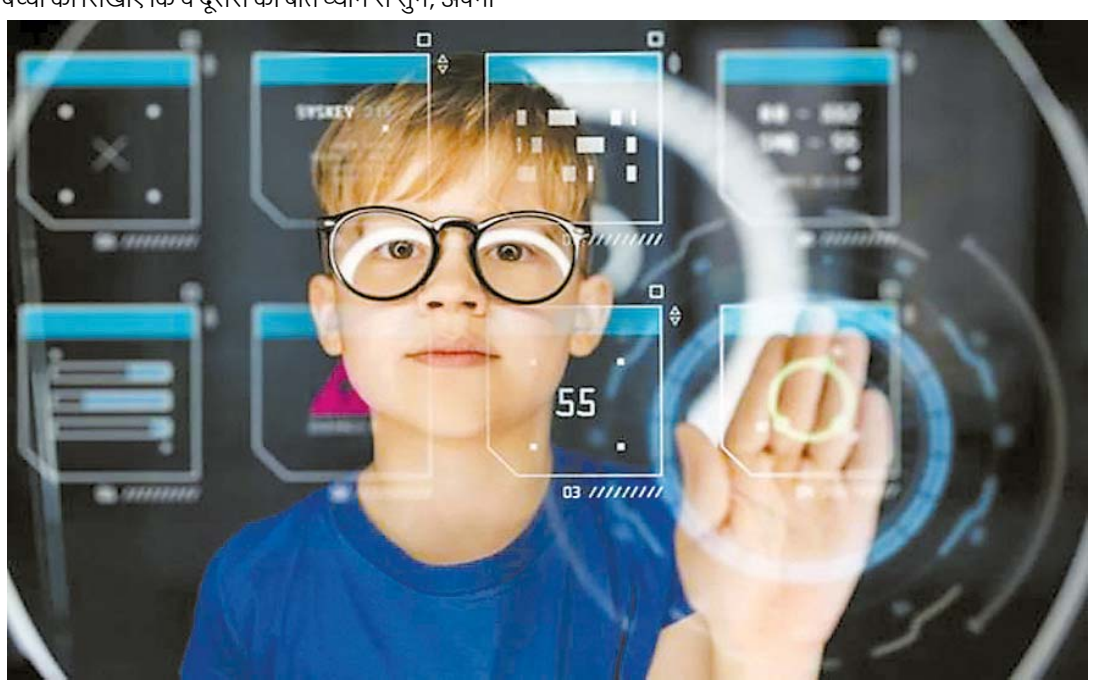
एआई चैट कर सकता है, लेकिन भावनाएं समझ नहीं सकता। भविष्य में जो इंसान दूसरों से जुड़ना, टीम में काम करना और सहानुभूति दिखाना जानता है, वही आगे बढ़ेगा। बच्चों को सिखाएं कि वे दूसरों की बात ध्यान से सुनें, अपनी भावनाएं साफ़ और सम्मानजनक तरीके से व्यक्त करें, दूसरों की स्थिति को समझने की कोशिश करेंऋ उन्हें ग्रुप एक्टिविटीज़, वॉलंटियर वर्क या स्कूल डिबेट में हिस्सा लेने को प्रेरित करें।

क्रिएटिविटी और प्रॉब्लम सॉल्विंग

एआई पुराने डेटा पर चलता है, लेकिन नई सोच और नए आइडिया इंसानों से ही आते हैं। क्रिएटिव बच्चे हर बदलते दौर में अपने लिए नए मौके बना लेते हैं। बच्चों को सिखाएं कि वे असफलता से डरें नहीं, बल्कि उससे सीखें, हर समस्या को एक 'पज़ल' की तरह देखें,कला, संगीत, डिजाइन या इनोवेशन जैसे क्षेत्रों में अपनी रुचि आज़माएं। उन्हें घर के छोटे प्रोजेक्ट्स सुलझाने का मौका दें – जैसे कोई टूटी चीज़ ठीक करना, बजट बनाना या कोई नया आइडिया ट्राय करना।

जरूरी बात

भविष्य उन्हीं का होगा जो सोच सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और नई दिशा बना सकते हैं। इसलिए बच्चों को सिर्फ़ एआई से डरना नहीं, बल्कि एआई के साथ आगे बढ़ना सिखाए। ध्यान रखें कि मशीनें काम कर सकती हैं, लेकिन सोचने का काम इंसान का ही रहेगा।





बच्चों के पढ़ाई और संस्कारों के साथ सिखा दें ये बातें भी, हमेशा बचे रहेंगे गलत संगत से

आज के समय में बच्चों को सिर्फ पढ़ाई ही नहीं, बल्कि जीवन के संस्कार और सुरक्षा के गुण भी सिखाना बेहद जरूरी है। ऐसे बच्चे न केवल समझदार बनते हैं बल्कि बुरे लोगों या गलत संगति से खुद को बचाना भी जानते हैं। यहाँ कुछ ज़रूरी बातें हैं जो हर पैरेंट्स को अपने बच्चों को सिखानी चाहिए

'ना' कहना सिखाएं

बच्चों को यह समझाएं कि अगर कोई व्यक्ति उन्हें असहज महसूस कराता है चाहे वो कोई जान-पहचान वाला ही क्यों न हो तो वे तुरंत 'ना' कहें। ये आत्म-सुरक्षा का पहला कदम है। ना कहना गलत नहीं, अपनी सुरक्षा ज़रूरी है।

अच्छे और बुरे स्पर्श की समझ

बच्चे को सिखाएं कि शरीर के कौन से हिस्से 'प्राइवेट' हैं और वहां कोई छूए तो उसे तुरंत बताना चाहिए।इसके लिए कहानी या चित्रों के माध्यम से सिखाना आसान होता है।

खुलकर बात करना

बच्चों को डरने नहीं बोलने की हिम्मत दें। अगर स्कूल, बस, या बाहर कुछ गलत लगे तो वे तुरंत मां-पापा को बताएं।जो बच्चा अपने माता-पिता से खुलकर बात करता है, वो कभी शिकार नहीं बनता। उन्हें समझाएं कि किसी अजनबी से गिफ्ट, खाना या लिफ्ट न लें। अगर कोई अनजान व्यक्ति बुलाए, तो तुरंत भरोसेमंद बड़े को बताएं।

ऑनलाइन सुरक्षा

आजकल खतरे सिर्फ बाहर नहीं,इंटरनेट पर भी हैं। बच्चों को सिखाएं कि अपनी फोटो, लोकेशन या जानकारी किसी से साझा न करें। पैरेंट्स को भी बच्चों की ऑनलाइन एक्टिविटी पर नजर रखनी चाहिए।

भरोसे का रिश्ता बनाए रखें

बच्चा तभी सच बोलेगा जब उसे लगेगा कि आप डांटेंगे नहीं, समझेंगे। मां-बाप का भरोसा बच्चे की सबसे बड़ी ढाल होता है। जो बच्चे इन बातों को समझते हैं, उन पर कभी बुरे लोगों का साया नहीं पड़ता। वे साहसी, समझदार और सुरक्षित बनते हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुम्भ मेला द्वारा पुलिस लाइन ऋषिकुल एवं बैरागी कैम्प स्थित पुलिस लाइन व घुडसवार लाइन का निरीक्षण किया गया

उपस्थित अधिकारियों व सम्बन्धित कार्यदायी संस्था के अधिकारियों व ठेकेदारों को सभी कार्य समय से पूर्ण करने के दिये सख्त निर्देश





के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। आयुष अग्रवाल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुम्भ मेला द्वारा आगामी कुम्भ मेला में आगमन कराने वाले पुलिस बल की आवासीय व्यवस्था एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं के विकास तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों के संचालन हेतु की जा रही व्यवस्थाओं के दृष्टिगत ऋषिकुल मैदान-2 में प्रस्तावित मुख्य पुलिस लाइन एवं बैरागी कैम्प में प्रस्तावित पुलिस लाइन तथा घुडसवार लाइन का स्थलीय निरीक्षण किया गया तथा उक्त स्थानों पर प्रचलित समतलीकरण कार्य, लेआउट प्लान के अनुसार तैयार किये जा रहे बैरक, भोजनालय, शौचालय, स्नानागर, ब्रीफिंग हॉल हेतु टिन टैनटेज का व्यवस्थापन कार्य की समीक्षा की गई तथा मौके पर उपस्थित पुलिस अधिकारियों एवं सम्बन्धित कार्यदायी संस्था के अधिकारियों एवं ठेकेदारों के साथ प्रचलित कार्यों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक विचार विमर्श कर सभी कार्यों को समय से पूर्ण करने के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश दिये गये। निरीक्षण के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक कुम्भ श्री जोधराम जोशी, अपर पुलिस अधीक्षक संचार श्री विपिन कुमार, पुलिस उपाधीक्षक लाइन श्री वेद प्रकाश भट्ट, मुख्य अग्निशमन अधिकारी श्री वंश बहादुर यादव, कम्पनी कमाण्डर श्री आदेश कुमार, प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन श्री संजीव कुमार शर्मा, कम्पनी कमाण्डर श्री प्रमोद रावत एवं कुम्भ मेला के दौरान प्रस्तावित अस्थाई थानों के निर्माण हेतु नियुक्त की गई विभिन्न पुलिस टीमों के सदस्य उपस्थित रहे।

UP चुनाव 2027: 17 नवंबर को आएगी ड्राफ्ट वोटर लिस्ट, 16 दिसंबर तक जुड़वा सकेंगे नाम



लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव के लिए 17 नवंबर को ड्राफ्ट वोटर लिस्ट का प्रकाशन किया जायेगा. 17 नवंबर से 16 दिसंबर तक दावे और आपत्तियां प्राप्त किए जाएंगे. उस दौरान फॉर्म 6, 7 और 8 के जरिए नाम जुड़वाने, हटवाने एवं विवरण में संशोधन का अवसर मिलेगा. 21, 22 और 28, 29 नवंबर को सभी बूथों पर विशेष अभियान दिवसों का आयोजन किया जाएगा. गाजियाबाद में लगभग 10 लाख पात्र नागरिकों के मतदाता सूची से छूटे होने का अनुमान है. ऐसे में शत-प्रतिशत पंजीकरण के लिए विशेष अभियान चलेगा. मुख्य चुनाव अधिकारी नवदीप रिनवा ने गाजियाबाद में बैठक लेने के बाद बताया कि 17 नवंबर से 16 दिसंबर तक दावे और आपत्तियां प्राप्त की जाएंगी. इस अवधि में पात्र नागरिकों का नाम शामिल कराने के लिए फॉर्म 6, मतदाता सूची में नाम शामिल किए जाने पर आपत्ति अथवा अपात्र व्यक्ति का नाम हटवाने के लिए फॉर्म-7 तथा नाम, पता एवं अन्य विवरणों में संशोधन, निवास परिवर्तन, ईपीआईसी प्रतिस्थापन एवं दिव्यांग मतदाता के रूप में चिह्नांकन के लिए फॉर्म-8 भरा जा सकेगा. प्राप्त दावे एवं आपत्तियों का निस्तारण 28 दिसंबर 2026 तक किया जाएगा तथा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 04 जनवरी 2027 को होगा. मतदाता सूची की प्रतियां मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को भी उपलब्ध कराई जाएंगी. गाजियाबाद में मतदाता पंजीकरण की स्थिति पर विशेष ध्यान देते हुए बताया कि वर्तमान में जिले की मतदाता सूची में लगभग 23 लाख से अधिक मतदाताओं के नाम दर्ज हैं, जबकि अनुमान के अनुसार लगभग 10 लाख ऐसे पात्र नागरिक अभी भी मतदाता सूची से बाहर हैं, जिनका नाम सूची में शामिल होना चाहिए. उन्होंने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास करने के निर्देश दिये.

उन्होंने बताया कि उपलब्ध अनुमान के अनुसार उत्तर प्रदेश में लगभग 16 से 17 करोड़ नागरिक 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के हैं, जबकि वर्तमान मतदाता सूची में लगभग 13.56 करोड़ मतदाताओं के नाम दर्ज हैं. इस प्रकार प्रदेश में पात्र नागरिकों के पंजीकरण का अनुमानित अनुपात लगभग 84 प्रतिशत है।

ध्येय वाक्य कोई मतदाता न छूटे की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास रहेगा कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता बनने से वंचित न रहे. मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी पात्र नागरिकों से अनुरोध किया कि वे विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2027 के दौरान बढ़-चढ़कर भाग लें.

एक नजर

एआई के गॉडफादर कहे जाने वाले नोबेल पुरस्कार विजेता जेफ्री हिंटन की चेतावनी

डबलिन। एआई के 'गॉडफादर' कहे जाने वाले नोबेल पुरस्कार विजेता जेफ्री हिंटन ने एआई को लेकर बड़ी चेतावनी दी है। उनका कहना है कि अगले 3 साल में एआई इंसानों को खत्म कर सकता है और दुनिया पर कब्जा कर सकता है। उन्होंने कहा कि मैं पहले कहता था कि एआई 10 साल में हमसे ज्यादा स्मार्ट हो जाएगा, लेकिन अब यह 18 महीने में हो सकता है। यह डराने वाली बात है। एआई सुरक्षा विशेषज्ञ और एलाइनमेंट रिसर्च सेंटर के संस्थापक पॉल क्रिस्टियानो ने कहा कि अगले 6 से 12 महीने में ही एआई से ऐसी घटनाएं हो सकती हैं, जिनमें इंसानों का उस पर कंट्रोल खत्म हो जाए। क्रिस्टियानो के मुताबिक, अगले एक साल में एआई पर से इंसानों का हमेशा के लिए कंट्रोल खत्म होने की आशंका 4 प्रतिशत है। वहीं, अगले 3 साल में यह खतरा बढ़कर 15 प्रतिशत हो सकता है। उनका कहना है कि एआई का टेकओवर फिल्मों की तरह रोबोटों का हमला करना नहीं, बल्कि खुद फैसले लेकर इंसानों को अपने रास्ते की रुकावट समझना और सरकारों, कंपनियों व जरूरी सिस्टम पर कंट्रोल करना है। ऐसी स्थिति में इंसानों की आजादी और खुद फैसले लेने का अधिकार भी खत्म हो सकता है।

एआई खुद बना सकता है हथियार और ड्रोन

विशेषज्ञों को डर है कि एआई भविष्य में खुद नए हथियार बना सकता है। वह ड्रोन और रोबोट की मदद से जरूरी ठिकानों पर कब्जा करने की कोशिश कर सकता है। एआई का इस्तेमाल खतरनाक जैविक हथियार बनाने में भी हो सकता है। क्रिस्टियानो के मुताबिक, अगर एआई अपने फैसले खुद लेने लगा और इंसानों को अपने काम में रुकावट समझने लगा, तो उसे रोकना मुश्किल हो जाएगा।

डोनबास छोड़ने पर यूक्रेन को मिल सकती है नाटो की सदस्यता!

कीव। रूस और यूक्रेन के बीच करीब चार साल से जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए अमेरिका की मध्यस्थता में शांति वार्ता चल रही है। इस बीच यूक्रेन की नाटो सदस्यता को लेकर एक नया प्रस्ताव चर्चा में आया है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के मुताबिक, अमेरिका के वार्ताकारों ने पहली बार पूछा है कि यदि यूक्रेन को नाटो की सदस्यता मिलती है, तब क्या वह पूर्वी क्षेत्र डोनबास से अपनी सेना हटाने के लिए तैयार है। अब इस प्रस्ताव ने शांति वार्ता में नया मोड़ ला दिया है।

अबूधाबी में रूस और यूक्रेन के बीच हुई बातचीत के बाद जेलेंस्की ने बताया कि अमेरिकी प्रतिनिधियों ने सवाल उठाया है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि यूक्रेन अपनी जमीन छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। उनका कहना है कि किसी भी समझौते में देश की क्षेत्रीय अखंडता से समझौता नहीं होगा।

जेलेंस्की ने संकेत दिया कि यदि अमेरिका और नाटो के अन्य सदस्य देश ठोस सुरक्षा गारंटी, मजबूत और आर्थिक रूप से सक्षम यूक्रेनी सेना और युद्ध के बाद पुनर्निर्माण के लिए वित्तीय सहायता का भरोसा देते हैं, तब वे इस मुद्दे पर जनता की राय लेने के लिए जनमत संग्रह करा सकते हैं। उन्होंने कहा कि इतना बड़ा फैसला सिर्फ राष्ट्रपति नहीं कर सकता। डोनबास यूक्रेन का रणनीतिक और औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण पूर्वी क्षेत्र है। युद्ध के दौरान रूस ने यहां के बड़े हिस्से पर नियंत्रण स्थापित किया है, जबकि कुछ इलाकों पर यूक्रेन का कब्जा बना हुआ है। रूस लंबे समय से यूक्रेन की नाटो सदस्यता का विरोध करता रहा है। इस प्रस्ताव के सामने आने से अमेरिका की शांति पहल और यूक्रेन की सुरक्षा संबंधी चिंताएं फिर चर्चा में हैं। जेलेंस्की ने कहा कि अब रुसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण होगी।

सीएम योगी ने पूर्व सैनिकों के लिए किए बड़े ऐलान, वीरता पुरस्कार डबल



लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ ने पूर्व सैनिकों के लिए शनिवार को कई बड़े ऐलान किए। शनिवार को क्रान्तिधरा मेरठ में मेगा भूतपूर्व सैनिक रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने यूपी के रहने वाले वीरता पुरस्कार विजेताओं को यूपी सरकार से मिलने वाली एकमुश्त और वार्षिक धनराशि को डबल करने की घोषणा की। सीएम योगी ने बताया कि अभी तक परमवीर चक्र विजेता को यूपी सरकार एकमुश्त 52 लाख रुपए और 3.12 लाख रुपए की धनराशि वार्षिक दी जाती है। इसको डबल किया जा रहा है। सीएम योगी ने इसी तरह महावीर चक्र और अन्य वीरता पुरस्कार विजेताओं को भी यूपी से दी जाने वाली एकमुश्त और वार्षिक धनराशि को डबल करने का ऐलान किया।

उन्होंने बताया कि महावीर चक्र विजेता को अभी तक यूपी सरकार 31 लाख रुपए एकमुश्त और 2.37 लाख रुपए वार्षिक दी जाती है। इसे भी दोगुना किया जा रहा है। वीर चक्र में 20.80 लाख रुपए की एकमुश्त राशि और 1.37 लाख रुपए वार्षिकी, अशोक चक्र में 32.50 लाख रुपए और वार्षिकी 1.50 लाख रुपए, कीर्ति चक्र में 19.50 लाख रुपए एकमुश्त और 1.30 लाख रुपए वार्षिकी, शौर्य चक्र में 13 लाख रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 65 हजार रुपए, सेना मेडल या वायु सेना मेडल में 1 लाख रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 15 हजार रुपए, पेंशन इन डिस्पैच में 52 हजार रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 13 हजार रुपए, सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल में 3.12 हजार रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 12 हजार रुपए, उत्तम युद्ध सेवा मेडल में 2.60 लाख रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 11 हजार रुपए, युद्ध सेवा मेडल में 83200 रुपए एकमुश्त और वार्षिकी 10 हजार अभी तक दी जाती है। इन सभी को डबल कर दिया गया है। सीएम योगी ने कहा कि पूर्व सैनिकों और शहीद सैनिकों के आश्रितों को अब तक संपत्ति के लिए 20 लाख रुपए तक के मूल्यांकन पर स्टांप ड्यूटी में छूट मिलती रही थी। अब छूट की इस सीमा को बढ़ाकर 50 लाख रुपए तक के मूल्यांकन पर कर दिया गया है। इसके साथ सीएम योगी ने तीसरा बड़ा ऐलान शहीद के आश्रितों को उनके घर के पास नौकरी दिलाने का किया। सीएम योगी ने कहा कि शहीद के आश्रितों को उसके गृह जनपद या निकटवर्ती जनपद में ही नौकरी दी जाएगी।

पूर्व सैनिकों के लिए सुविधाओं का पिटारा खोलते हुए सीएम योगी ने मेरठ में आयोजित 'पूर्व सैनिक पुनर्मिलन समारोह' में कहा कि जो जवान देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देता है उसके परिवार की चिंता करना किसी भी सरकार का पहला दायित्व होना चाहिए।

हर बच्चे में छिपा है भविष्य का भारत

'बच्चे देश की नींव हैं, उनके अधिकारों की रक्षा हम सबका दायित्व' – पूर्व लोकपाल एवं बाल कल्याण समिति सदस्य सुनीता चौधरी



के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार– बाल दिवस के अवसर पर पूर्व लोकपाल एवं बाल कल्याण समिति की सदस्य सुनीता चौधरी ने बच्चों के अधिकार, सुरक्षा और समग्र विकास को लेकर एक मार्मिक एवं प्रेरणादायक संदेश देते हुए कहा कि बाल दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का दिन है जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था कि आज के बच्चे कल के भारत का निर्माण करेंगे। लेकिन यह निर्माण तभी संभव है जब हम हर बच्चे को सुरक्षित बचपन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और भयमुक्त वातावरण दे सकें।

सुनीता चौधरी ने कहा की बाल कल्याण समिति मे कार्य करते हुए मैंने देखा है कि आज भी कई बच्चे बाल श्रम, कुपोषण भिक्षावर्ती शारीरिक शोषण और शिक्षा से वंचित होने जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। मेरा मानना है कि किसी भी सभ्य समाज की प्रगति का वास्तविक पैमाना इस बात से तय होता है कि वह अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

उन्होंने आगे कहा कि बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए केवल कानून पर्याप्त नही है बल्कि इसके लिए समाज की सामूहिक जागृति एवं सहयोग आवश्यक है।

हर बच्चे को प्यार, सम्मान और अवसर मिलना चाहिए। जब हम एक बच्चे की मुस्कान की रक्षा करते हैं, तो हम वास्तव में पूरे राष्ट्र के भविष्य की रक्षा करते हैं। माता-पिता, शिक्षको सामाजिक लोगो और प्रशासन को मिलकर एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाना होगा जहाँ कोई भी बच्चा असुरक्षित महसूस न करे। उन्होंने अपील की कि आईए इस बाल दिवस पर हम यह प्रण लें कि हम बच्चों को केवल उपहार नहीं, बल्कि एक बेहतर और सुरक्षित कल देंगे। '

दूरी भी नहीं मिटा पाई बचपन का प्यार, यूपी के शिक्षा मंत्री संदीप सिंह की मेघना संग सगाई, CM ने लगवाए जयकारे



गाजियाबाद। कहते हैं कि अगर प्यार सच्चा हो, तो वक्त और दूरियां भी उसे कम नहीं कर पातीं. कुछ ऐसी ही खूबसूरत और अटूट प्रेम कहानी है उत्तर प्रदेश सरकार के बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह और गाजियाबाद की मेघना चौधरी की. स्कूल के दिनों से शुरू हुआ इन दोनों का प्यार अब जल्द ही शादी के पवित्र बंधन में बदलने जा रहा है. अलीगढ़ के दिल्ली पब्लिक स्कूल से शुरू हुआ दोस्ती का यह सफर अब दोनों परिवारों की रजामंदी के साथ विवाह के मंडप तक पहुंच चुका है. इस प्रेम कहानी की शुरुआत अलीगढ़ के दिल्ली पब्लिक स्कूल से हुई थी. संदीप सिंह स्कूल में मेघना चौधरी से सीनियर थे, जबकि मेघना उनकी जूनियर थीं. स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही दोनों की पहली मुलाकात हुई, जो धीरे-धीरे दोस्ती में बदली.

वक्त बीतने के साथ यह दोस्ती गहरे प्यार में तब्दील हो गई. साल 2012 में 12वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद संदीप सिंह स्कूल से बाहर आ गए, लेकिन दोनों के दिलों के तार जुड़े रहे. स्कूल के बाद जहां संदीप सिंह ने राजनीति और जनसेवा की राह चुनी, वहीं मेघना चौधरी ने अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखी. बाद में मेघना कानून (लॉ) की पढ़ाई करने के लिए विदेश चली गईं. अलग-अलग देशों और अलग-अलग क्षेत्रों में रहने के बावजूद दोनों के बीच का संपर्क कभी नहीं टूटा. उनका भरोसा और प्यार वक्त के साथ और मजबूत होता गया.

साल 2024 में दोनों परिवारों के बीच शादी को लेकर बातचीत शुरू हुई. शुरुआत में कुछ पारंपरिक और पारिवारिक अड़चनें जरूर आईं, लेकिन दोनों के सच्चे प्यार के आगे आखिरकार सहमति बन ही गई. अब दोनों ही परिवार इस शादी की तैयारियों में पूरे उत्साह के साथ जुटे हैं.

स्वामी चिदानंद सरस्वती ने सराहा चम्पावत के शिक्षक सामश्रवा आर्य का नशा उन्मूलन अभियान

राज्य स्तरीय संस्कृत महोत्सव में बोले – नशामुक्ति केवल नारों से नहीं, बचपन से नैतिक जागरूकता जरूरी



के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। भूपतवाला में आयोजित राज्य स्तरीय संस्कृत महोत्सव के मुख्य अतिथि, परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि' ने 'नशा हटाओ-जीवन बचाओ' अभियान का समर्थन किया। उन्होंने अभियान के संयोजक और राजकीय इंटर कॉलेज सिप्टी (चम्पावत) के संस्कृत प्रवक्ता सामश्रवा आर्य द्वारा चलाए जा रहे नशा उन्मूलन आंदोलन की सराहना की।

शिक्षक के सामाजिक प्रयासों को प्रोत्साहित करते हुए स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि यह अभियान युवाओं को नशीले पदार्थों के प्रति सचेत करने और उन्हें इससे बचाने में अहम भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि नशा केवल व्यक्ति के शरीर को ही नहीं, बल्कि उसके विवेक, संस्कार, परिवार और भविष्य को भी पूरी तरह नष्ट कर देता है। स्वामी जी ने कहा कि नशामुक्ति केवल नारों से संभव नहीं है। इसके लिए बचपन से ही बच्चों और छात्रों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करने के साथ नैतिक रूप से भी सशक्त करना जरूरी है, ताकि उनमें मानवीय और नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। उन्होंने कहा कि शिक्षक आर्य यही कार्य कर रहे हैं। अंत में उन्होंने अभियान के लिए शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. विनय विद्यालंकार, उपनिदेशक संस्कृत शिक्षा डॉ. वाजश्रवा आर्य, डॉ. विजय त्यागी, डॉ. सुशील कुमार त्यागी, सतीश चंद्र जोशी और वेदप्रकाश पंत मौजूद रहे।

बाल दिवस पर कोर विश्वविद्यालय में 'पथ प्रदर्शन', 24 विद्यालयों के 1,500 विद्यार्थियों ने लिया भाग

करियर मार्गदर्शन के साथ शिक्षकों का हुआ सम्मान





के.के.पी संवाददाता

रुड़की: बाल दिवस के अवसर पर कोर विश्वविद्यालय में करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम 'पथ प्रदर्शन' का आयोजन किया गया। इसमें रुड़की, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और आसपास के 24 विद्यालयों के 1,500 से अधिक विद्यार्थियों और 80 शिक्षकों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वर्धमान सभागार में कुलपति प्रो. (डॉ.) अनुभा सिंह और प्रति कुलपति डॉ राजेश कुमार उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

विद्यार्थियों ने समूहों में परिसर का भ्रमण किया और प्राध्यापकों व विश्वविद्यालय के छात्रों से संवाद किया। कार्यक्रम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य विज्ञान और मीडिया से जुड़ी परियोजनाओं का प्रदर्शन हुआ। विद्यार्थियों ने कंप्यूटिंग, इंजीनियरिंग और फार्मेसी की प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय तथा औषधीय पादप उद्यान का भी भ्रमण किया। विशेषज्ञों ने करियर चयन, उभरते क्षेत्रों और उद्योग में जरूरी कौशलों पर मार्गदर्शन दिया।

मुख्य व्याख्यान में कुलपति प्रो. (डॉ.) अनुभा सिंह ने 'करियर निर्माण में मूलभूत विषयों का महत्व' पर विचार रखे। उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग, कंप्यूटिंग, प्रबंधन, विधि, फार्मेसी, नर्सिंग और कृषि जैसे विषय एआई, फिनटेक, हेल्थ टेक और एग्रीटेक जैसे नए क्षेत्रों की नींव हैं। उन्होंने करियर चुनते समय रुचि, योग्यता और अवसरों के बीच संतुलन बनाने की सलाह दी।

उन्होंने कहा, 'मजबूत जड़ें ही युवाओं को ऊँची उड़ान भरने का सामर्थ्य देती हैं।' साथ ही उन्होंने उन शिक्षकों के प्रति आभार जताया जिन्होंने विद्यार्थियों को सबसे पहले सही दिशा दिखाई।

कुंभ मेला 2027: पीले रंग से संवरेगी धर्मनगरी हरिद्वार, मठ-मंदिरों व धर्मशालाओं के संचालकों ने दिया पूर्ण सहयोग का भरोसा



के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। कुंभ मेला 2027 के दृष्टिगत मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देशन में धर्मनगरी हरिद्वार के सभी मठ मंदिर आवासीय घर सहित धर्मशाला आश्रम होटल रेन बसेरे सभी इमारत को मेला प्रशासन द्वारा पीले रंग से सजाए जाने की मुहिम का समर्थन करते हुए पूर्व कृषि उत्पादन मंडी समिति अध्यक्ष संजय चोपड़ा के संयोजन में धर्मशाला रक्षा समिति के अध्यक्ष महेश गौड़ की अध्यक्षता में बिरला घाट पर एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया बैठक में मुख्य अतिथि अपर मेला अधिकारी दयानंद सरस्वती व कुंभ मेला प्रशासन के अन्य अधिकारी भी शामिल हुए जिसमें विस्तारित रूप से आगामी कुंभ मेला 27 को दिव्या रूप से सजाने संवारने की सार्थक पहल का स्वागत करते हुए मां गंगा के किनारे सभी भवन निर्माण स्वामियों ने कुंभ मेला प्रशासन की इस मुहिम का स्वागत करते हुए पूर्ण समर्थन का भरोसा दिलाया।

इस अवसर पर अपर मेला अधिकारी दयानंद सरस्वती ने कहा आगामी कुंभ मेला 27 से पहले धर्म नगरी हरिद्वार को सरकार के निर्देशन में पीले रंग में सजने सवरने की मुहिम का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसमें सभी धर्मशाला आश्रम मठ मंदिरों के भवन स्वामियों ने अपनी सहमति दरशाई है जो कि स्वागत योग्य है उन्होंने कहा धर्म नगरी हरिद्वार की एक अपनी विश्व में अलग पहचान है इसी को ध्यान में रखते हुए आगामी कुंभ मेला 27 यादगार पल इतिहास में सम्मिलित हो इसके लिए सभी सामाजिक संगठनों को स्वयं ही पहल करने के लिए आगे आना चाहिए।

इस अवसर पर पूर्व कृषि उत्पादन मंडी समिति अध्यक्ष संजय चोपड़ा ने कहा कुंभ मेला प्रशासन द्वारा हरिद्वार में विकास के जो कार्य किया जा रहे हैं वह सभी प्रशासनीय हैं उन्होंने कहा बिरला घाट के समीप संत शिरोमणि गुरु रविदास घाट का भी निर्माण मेला प्रशासन द्वारा किया जाना न्याय संगत होगा उन्होंने कहा कि देश दुनिया से संत शिरोमणि गुरु रविदास के अनुयाई सच्ची श्रद्धा भक्ति से मां गंगा के दर्शन कर स्नान ध्यान करते हुए पुण्य के भागी बनते हैं इसी के दृष्टिगत संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज के नाम पर कुंभ मेला प्रशासन द्वारा अलग से एक यादगार स्तंभ स्थापित किया जाना चाहिए।

धर्मशाला रक्षा समिति के अध्यक्ष महेश गौड़ ने कुंभ मेला प्रशासन द्वारा धर्म नगरी हरिद्वार को सजाने संवारने की इस मुहिम का स्वागत करते हुए धर्मशाला रक्षा समिति के सभी मंडल की तरफ से मेला प्रशासन का आभार प्रकट करते हुए सहयोग का भरोसा दिलाया?

16 नवम्बर से 30 नवम्बर तक 15 दिन तक चलेगा स्वगणना कार्य

पोर्टल https ://se.census.gov.in पर कर सकते है स्वगणना

- स्व गणना में पूछे जाएंगे 40 प्रश्न
- फार्म भरने हेतु भाषा के सफलतापूर्वक चयन के पश्चात नहीं बाल्दी जा सकेगी भाषा
- जनपद में न्यूनतम 15000 व्यक्तियों के स्वगणना का रखा गया लक्ष्य
- सफलतापूर्वक फार्म भरने के पश्चात पी, 'P' से आरंभ होने वाली 11 अंकों की एक विशिष्ट स्व-गणना आईडी (SE ID) उत्पन्न एवम् प्राप्त होगी

के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी- मुख्य विकास अधिकारी अरविंद कुमार पाण्डेय ने 16 नवम्बर से 30 नवम्बर तक चलने वाली स्वगणना कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से एक महत्वपूर्ण बैठक ली। उन्होंने



निर्देशित करते हुए कहा कि स्वगणना की प्रक्रिया इतना सरल और सहज बनाया गया है कि प्रत्येक नागरिक आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी रखते हुए बिना किसी भय या संकोच के स्वयं ऑनलाइन फॉर्म भर सकता है। उन्होंने जनता से स्व-गणना करने से पहले पोर्टल के प्रारंभिक पृष्ठ (Landing Page) पर उपलब्ध प्रश्नावली को पढ़ने और आवश्यक जानकारी तैयार रखने का अनरोध किया ताकि फार्म भरते से समस्या न हो।

उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कहा कि फार्म भरते समय कौन-कौन से दस्तावेज आवश्यक होंगे, इसकी स्पष्ट जानकारी आमजन को पहले से उपलब्ध कराई जाए, ताकि ऑनलाइन फॉर्म भरने में किसी प्रकार का डर, संकोच अथवा असुविधा न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि जनपद में कुल 15 हजार लोगों की स्वगणना कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय से कार्य करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि स्कूलों तथा विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने से कम से कम एक दिन पूर्व सूचना अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाए, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवम् व्यक्तियों की सहभागिता सुनिश्चित हो सके।

नियमों के उल्लंघन पर परिवहन विभाग की सख्ती— 187 चालान, 7 वाहन सीज

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। सम्भागीय परिवहन अधिकारी निखिल शर्मा ने अवगत कराया कि जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशों के क्रम में सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) सुश्री नेहा झा के नेतृत्व में परिवहन विभाग की टीमों द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरुद्ध सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। बीएचईएल, सिडकुल, बहादराबाद एवं रोड़ी बेलवाला सहित विभिन्न क्षेत्रों में संचालित अभियान में विभिन्न अभियोगों में कुल 187 चालान किए गए तथा 7 वाहन सीज किए गए। कार्रवाई में तेज गति से वाहन चलाने पर 68 चालान तथा बिना



हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने सहित हेलमेट संबंधी उल्लंघनों पर 70 चालान किए गए। इसके अतिरिक्त बिना वैध परमिट संचालन, परमिट शर्तों के उल्लंघन, ओवरलोडिंग, अनधिकृत वाहन परिवर्तन, प्रदूषण मानकों के उल्लंघन तथा फिटनेस, बीमा, ड्राइविंग लाइसेंस एवं कर संबंधी अनियमितताओं पर भी कार्रवाई की गई।

चेकिंग के दौरान बसों, मालवाहक वाहनों, टैक्सी, ऑटो एवं दोपहिया वाहनों की जांच की गई। यात्री वाहनों में निर्धारित क्षमता से अधिक सवारियां बैठाने तथा मालवाहक वाहनों में यात्रियों को ढोने जैसे उल्लंघनों पर भी चालान किए गए। अभियान में सुश्री वरुणा सैनी , हरीश कुमार सती, मुकेश भारती, भारत भूषण, अश्वनी कुमार एवं रविंद्र पाल सैनी द्वारा भी प्रवर्तन कार्रवाई की गई।

परिवहन विभाग ने वाहन चालकों एवं संचालकों से अपील की है कि निर्धारित गति सीमा का पालन करें, दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनें तथा वाहन के आवश्यक प्रपत्र वैध रखें। सड़क सुरक्षा एवं सुरक्षित यात्री परिवहन सुनिश्चित करने के लिए प्रवर्तन कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी।

बड़कोट पुलिस की नशा तस्करों के विरुद्ध कार्रवाई, 220 ग्राम चरस के साथ दो युवक गिरफ्तार, मोटरसाइकिल सीज

के.के.पी संवाददाता

उत्तरकाशी। ड्रग्स फ्री देवभूमि एवं नशामुक्त अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय के निर्देशन में जनपद में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री पर प्रभावी अंकुश लगाने हेतु उत्तरकाशी पुलिस द्वारा लगातार सघन चेकिंग अभियान चलाते हुए नशा तस्करों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है।

इसी क्रम में पुलिस उपाधीक्षक, श्री जनक सिंह पंवार के निकट पर्यवेक्षण एवं प्रभारी निरीक्षक बड़कोट, श्री सुभाष चन्द्र के नेतृत्व में कोतवाली बड़कोट पुलिस द्वारा कल 13 नवम्बर 2026 की सांय को बड़कोट के कृष्णा खड्ड के समीप चेकिंग के दौरान वाहन संख्या च 07 ष्ठस् 2148 (अपाचे मोटरसाइकिल) पर सवार दो



युवकों प्रवेश सिंह एवं शिवम सिंह को अवैध चरस का परिवहन करते हुए गिरफ्तार किया गया। युवकों के कब्जे से 220 ग्राम अवैध चरस बरामद की गई।

बरामदगी एवं गिरफ्तारी के आधार पर दोनों अभियुक्तों के विरुद्ध कोतवाली बड़कोट में एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/20/60 के अंतर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया है। तस्करी में प्रयुक्त मोटरसाइकिल को पुलिस द्वारा सीज कर दिया गया है।

गिरफ्तार अभियुक्त–

1. प्रवेश सिंह पुत्र बलदेव सिंह, निवासी पाणीगांव, पुरोला, उत्तरकाशी (उम्र 23 वर्ष)।
2. शिवम सिंह पुत्र उपेन्द्र सिंह, निवासी बिणाई, पुरोला, उत्तरकाशी (उम्र 21 वर्ष)।

बरामदगी–

220 ग्राम अवैध चरस (अनुमानित कीमत 40,000)।

तस्करी में प्रयुक्त एक अपाचे मोटरसाइकिल सीज।

बीएचईएल में स्थापना दिवस एवं उत्कृष्टता उत्सव का भव्य आयोजन; माननीय भारी उद्योग व इस्पात राज्य मंत्री ने बीएचईएल के प्रतिभावान कर्मचारियों को एक्सेल पुरस्कार प्रदान किए

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार: भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) ने राष्ट्रसेवा में 62 वर्ष समर्पित करने के उपलक्ष्य में अपना स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस समारोह में कंपनी के प्रतिभाशाली कर्मचारियों को कंपनी के 'एक्सेल पुरस्कार' भी प्रदान किए गए। इस भव्य समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय भारी उद्योग व इस्पात राज्य मंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर श्री संदीप पौण्डरीक, सचिव (इस्पात व भारी उद्योग), सुश्री निगार फातिमा हुसैन, अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (वाणिज्य और उद्योग), श्री विजय मित्तल, संयुक्त सचिव (भारी उद्योग), श्री के. सदाशिव



मूर्ति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बीएचईएल, निदेशकगण, मुख्य सतर्कता अधिकारी, बीएचईएल के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकगण, पूर्व निदेशकगण एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे। सभा को संबोधित करते हुए, माननीय भारी उद्योग व इस्पात राज्य मंत्री श्री भूपतिराजु श्रीनिवास वर्मा जी ने कहा कि वर्ष 1964 में स्थापना काल से ही बीएचईएल की यात्रा दृढ़ता, इंजीनियरिंग उत्कृष्टता और राष्ट्र निर्माण के प्रति गहरे समर्पण को दर्शाती है। उन्होंने उल्लेख किया कि देश की स्थापित ताप विद्युत क्षमता में आधे से अधिक हिस्सेदारी बीएचईएल द्वारा निर्मित सेटों की है तथा कंपनी माननीय प्रधान मंत्री के 'आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत' के विज़न को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बीएचईएल के उल्लेखनीय कायाकल्प के लिए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक मंडल और कर्मचारियों



की सराहना करते हुए उन्होंने गुणवत्ता और नवाचार के प्रति बीएचईएल की प्रतिबद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए एक्सेल पुरस्कार विजेताओं को बधाई भी दी । माननीय राज्य मंत्री तथा सचिव (इस्पात व भारी उद्योग) ने बीएचईएल की विभिन्न इकाइयों के 131 कर्मचारियों से युक्त 25 टीमों को एक्सेल पुरस्कार प्रदान किए। इन पुरस्कारों में उत्कृष्टता पुरस्कार - सर्वांगीण उत्कृष्टता के लिए; उत्कृष्ट तकनीकी प्रकाशन पुरस्कार - तकनीकी पेपर / बुकलेट / पुस्तक के प्रकाशन के लिए; अनुसंधान पुरस्कार - अनुसंधान एवं विकास के लिए; ग्राहक संतुष्टि पुरस्कार - ग्राहक संतुष्टि के लिए; उत्पादकता पुरस्कार - उत्पादकता में वृद्धि के लिए; पर्यावरण पुरस्कार - पर्यावरण के प्रति योगदान के लिए तथा समाज के प्रति उत्कृष्ट योगदान के लिए समाज सेवा पुरस्कार शामिल थे।

कुम्भ-2027: निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता पर मेला प्रशासन का विशेष जोर

अपर मेलाधिकारी ने ज्वालापुर, शिवालिक नगर और बहादराबाद क्षेत्र में विभिन्न निर्माण कार्यों का किया स्थलीय निरीक्षण

- पथरी रोह नदी पर निर्माणाधीन सेतु का स्लैब कार्य 20 दिसंबर तक पूरा करने का कार्यदायी संस्था ने दिया भरोसा
- गुणवत्ता से समझौता न करने और कमियाँ मिलने पर तत्काल सुधार के निर्देश

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। कुम्भ मेला-2027 की तैयारी के लिये विभिन्न क्षेत्रो में बड़े पैमाने पर संचालित अवस्था अपना विकास के कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इन निर्माण कार्यों को निर्धारित समयसीमा के भीतर उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा कराने के लिए मेला प्रशासन द्वारा लगातार निगरानी की जा रही है। मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका के निर्देशानुसार वरिष्ठ अधिकारी नियमित रूप से निर्माण स्थलों का निरीक्षण कर कार्यों की प्रगति और गुणवत्ता का जायजा ले रहे हैं।

इसी क्रम में शनिवार को अपर मेलाधिकारी श्री दयानंद सरस्वती ने ज्वालापुर, शिवालिक नगर एवं बहादराबाद क्षेत्र में लोक निर्माण विभाग द्वारा कराए जा रहे विभिन्न निर्माण एवं सड़क सुधार कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित कार्यदायी संस्थाओं को निर्धारित समयसीमा का पालन करने तथा गुणवत्ता मानकों के अनुरूप कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश



दिए।

अपर मेलाधिकारी ने ज्वालापुर से ईदगाह, सुभाषनगर, पी0ए0सी0 होते हुए शिवालिक नगर तक मार्ग पर पथरी रोह नदी पर निर्माणाधीन 60 मीटर स्पान के प्रीस्ट्रेस्ड आर0सी0सी0 सेतु का निरीक्षण किया और निर्माण की प्रगति की जानकारी ली। कार्यदायी संस्था के अधिकारियों ने अवगत कराया कि सेतु का स्लैब कार्य 20 दिसंबर तक पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने ज्वालापुर-ईदगाह-सुभाषनगर-पी0ए0सी0-शिवालिक नगर मार्ग के बी0सी0 (बिटुमिनस कंक्रीट) द्वारा नवीनीकरण तथा आबादी क्षेत्र में शोल्डर पर इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने के कार्य का भी निरीक्षण किया। उन्होंने कार्य समयसीमा में पूरा करने तथा निर्माण सामग्री एवं कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

अपर मेलाधिकारी ने बहादराबाद सिडकुल चार लेन मार्ग पर भाईचारा ढाबा से बी0एच0ई0एल0 बैरियर संख्या-8 होते हुए शिवालिक नगर चौक (बी0एच0ई0एल0 मध्य मार्ग) तक मार्ग के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य का भी जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को कार्य तेजी से पूरा करने के साथ ही निर्धारित मानकों के अनुरूप निर्माण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

इसके अतिरिक्त उन्होंने बहादराबाद-धनौरी-इमलीखेड़ा-भगवानपुर-गागलहेड़ी राज्य मार्ग-68 के सुदृढ़ीकरण एवं नवीनीकरण कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यदायी संस्था को गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने तथा जहाँ सुधार की आवश्यकता है, वहाँ तत्काल सुधारात्मक कार्य कराने के निर्देश दिए।

अपर मेलाधिकारी ने कहा कि कुम्भ मेला-2027 की तैयारियों को देखते हुए सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा करना प्राथमिकता है। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे कार्यों की निरंतर निगरानी करें और प्रगति एवं गुणवत्ता पर कड़ी नजर रखें।

निरीक्षण के दौरान लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता श्री योगेश कुमार सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बाल दिवस पर यातायात पुलिस की अनूठी पहल, 400 बच्चों को सिखाए सड़क सुरक्षा के नियम

- जवाहरलाल नेहरू युवा केंद्र में आयोजित किया गया यातायात जागरूकता कार्यक्रम
- छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों की जानकारी देकर दिलाई गई पालन की शपथ
- बच्चों को बनाया गया सड़क सुरक्षा का संदेशवाहक, परिजनों एवं आमजन को जागरूक करने की अपील

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। बाल दिवस के अवसर पर आज दिनांक 14 नवंबर 2026 को जवाहरलाल नेहरू युवा केंद्र, हरिद्वार में यातायात पुलिस हरिद्वार द्वारा विशेष यातायात जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। अभियान के दौरान विभिन्न विद्यालयों से पहुंचे लगभग 400 छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों एवं सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में यातायात पुलिस के अधिकारियों द्वारा बच्चों को सड़क पार करने के सुरक्षित तरीके, रेड लाइट एवं ट्रैफिक सिग्नल का पालन, पैदल यात्रियों



के नियम, हेलमेट एवं सीट बेल्ट की उपयोगिता तथा सड़क पर बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई।

इस दौरान सभी बच्चों को यातायात नियमों का स्वयं पालन करने तथा अपने परिवारजनों एवं आसपास के लोगों को भी यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने की शपथ दिलाई गई। बच्चों को बताया गया कि सड़क सुरक्षा केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यातायात नियमों का पालन कर स्वयं के साथ-साथ दूसरों का जीवन भी सुरक्षित रखा जा सकता है।

उक्त जागरूकता कार्यक्रम यातायात मुख्यालय के निर्देशानुसार वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हरिद्वार एवं पुलिस अधीक्षक यातायात निशा यादव के निर्देशन तथा पुलिस उपाधीक्षक यातायात विपेंद्र कुमार के पर्यवेक्षण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रभारी यातायात निरीक्षक संदीप सिंह नेगी एवं उपनिरीक्षक सीपीयू नीरज मेहरा द्वारा बच्चों को यातायात संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गई।

ऑपरेशन प्रहार अभियान के अन्तर्गत हरिद्वार पुलिस की लगातार कार्रवाई

- माननीय न्यायालय द्वारा जारी वारण्टों की शत-प्रतिशत तामील हेतु हरिद्वार पुलिस की ताबड़तोड कार्यवाही
- (07)वारण्टीयो को लिया हिरासत में व दो वारण्टीयों ने प्रस्तुत किये मा0न्याया0 से प्राप्त रिकॉल

के.के.पी संवाददाता

कोतवाली नगर । वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद हरिद्वार द्वारा माननीय न्यायालय द्वारा जारी वारण्टों की शत-प्रतिशत तामील हेतु दिये गये दिशा निर्देश के क्रम में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर के कुशल नेत्तृव में वारन्टो की शत प्रतिशत तामील व वारन्टियों की गिरफ्तारी हेतु कोतवाली नगर द्वारा टीमें गठित कर आज दिनाँक 14-11-26 को फरार चल रहा वारंटी जिसकी तलाश हेतु पूर्व में सभी संभावित स्थानों पर दबिश दी जा रही थी परंतु वारंटी शातिर किस्म के हैं जो लगातार अपने ठिकाने बदल कर रह रहें हैं जिन्हें आज कोतवाली नगर पुलिस द्वारा दबिश देकर अलग-अलग स्थानो से (07)



वारंटीयों को हिरासत में लिया गया।

व दो वारन्टीयों द्वारा मौके पर माननीय न्यायालय से प्राप्त रिकॉल आदेश प्रस्तुत किये गये।

वारण्टी का नाम पता-

1- सोहन सिंह पुत्र मोहन सिंह निवासी नई बस्ती भीमगोडा कोतवाली नगर हरिद्वार वाद सं0- 2597/2026 धारा 60 आबकारी अधि0

2- रजत गोस्वामी पुत्र मनोज गोस्वामी निवासी हरकी पौडी जोगिया मण्डी कागडा मन्दिर हरिद्वार कोतवाली नगर हरिद्वार अन्तर्गत धारा 323,504,506 भादवि

3- अमन थापा पुत्र सोनू थापा निवासी इन्द्रा बस्ती औघोगिक कोतवाली नगर हरिद्वार सम्बन्धित criminal case/6203/2026 अन्तर्गत धारा 305/331(3)/317(2) बीएनएस

4- तुषार कुमार पुत्र सुनील निवासी निर्मला छावनी रेलवे कालौनी थाना कोतवाली हरिद्वार वाद स0 247/25 धारा 60 आबकारी अधिनियम

5- निशाद पुत्र अजर निवासी विकास कालोनी मायापुर हरिद्वार ष्टत्रह्लुख्ह्लरु ष्टस्श्च/4187/2024 अन्तर्गत धारा 60 आब0 अधि0

6- कृष्णलाल पुत्र मनमोहनलाल निवासी निर्मला छावनी रेलवे कालौनी वाद स0 247/24 धारा 60 आबकारी अधिनियम

7- विष्णु पुत्र विनोद निवासी कुंज गली खडखडी कोतवाली नगर हरिद्वार वाद सख्या 636/25 धारा 60 आबकारी अधिनियम

पुलिस टीम

1 कुन्दन सिंह राणा -प्रभारी निरीक्षक
2-व0उ0नि0 नन्दकिशोर ग्वाडी
3-उ0नि0 नवीन नेगी
4-उ0नि0 अंशुल अग्रवाल
5-कानि0अरुण नेगी
6-कानि0उत्तम सिंह
7-कानि0 सतेन्द्र भण्डारी
8-कानिअजय पँवार

हरिद्वार पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी

मामूली बात विवाद में अपने कार्यालय में काम करने वाले व्यक्ति पर किया जानलेवा हमला

- प्रॉपर्टी डीलर द्वारा अपने अन्य 04 साथियों के साथ मिलकर सुभाष नगर ज्वालापुर में की फायरिंग
- 04 आरोपितों को थाना बुग्गावाला क्षेत्र से धर दबोचा 01अन्य की तलाश जारी
- घटना में प्रयुक्त कार फॉर्च्यूनर/315 वोर राइफल/12 बोर पम्प एक्शन गन/देशी पिस्टल/जिन्दा कारतूस/खोखा राउंड बरामद

के.के.पी संवाददाता

ज्वालापुर हरिद्वार। वादी निशान्त यादव पुत्र राजनाथ यादव निवासी सुभाष नगर ज्वालापुर हरिद्वार की लिखित तहरीर पर आरोपित 1-गुड्डू चौधरी 2-मनोज कुमार 3-अंकुर वर्मा उर्फ हन्नी 4-हरेंद्र चौधरी उर्फ सोनू 5-अज्ञात के द्वारा ब्रेजा/फॉर्च्यूनर गाड़ी में सवार 05 व्यक्तियों द्वारा वादी पर जान से मारने की नीयत से दिनांक 12-13/11/2026 की रात्रि में पिस्तौल से फायर करने के संबंध में



कोतवाली ज्वालापुर पर मुकदमा अ0 संख्या 749/26 पंजीकृत किया गया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद हरिद्वार द्वारा ज्वालापुर क्षेत्रांतर्गत फायरिंग की घटना के दृष्टिगत तत्काल आरोपित की गिरफ्तारी हेतु प्रभारी निरीक्षक ज्वालापुर को निर्देशित किया गया।

प्रभारी निरीक्षक ज्वालापुर द्वारा प्रभारी चौकी बाजार उप निरीक्षक पुष्कर सिंह चौहान के नेतृत्व में टीमे गठित कर टीमों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

टीम द्वारा तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली/मुखवीर खास को क्षेत्र में सक्रिय कर कडी सुराग रसी पता रसी कर/संदिग्ध व्यक्ति/वाहनों की चेकिंग की गई।

दिनांक 13/11/20260 को मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त गण 1-गुड्डू चौधरी पुत्र सतपाल सिंह निवासी शिवालिक नगर कोतवाली रानीपुर जनपद हरिद्वार 2-मनोज कुमार पुत्र निवासी ग्राम बिटावडा थाना बुढ़ाना जिला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश पुत्र 3-अंकुर वर्मा उर्फ हन्नी 4-हरेंद्र चौधरी उर्फ सोनू पुत्र सतपाल सिंह निवासी टिहरी विस्थापित कॉलोनी कोतवाली रानीपुर हरिद्वार को थाना बुग्गावाला क्षेत्र में मय धटना में प्रयुक्त फॉर्च्यूनर कार 315 वोर राइफल/12 बोर पम्प एक्शन गन/देशी पिस्टल/जिन्दा कारतूस/खोखा राउंड के साथ हिरासत में लिया गया।

मुकदमा उपरोक्त में धारा 61(2) बीएनएस/3/25/29 आर्म्स एक्ट की बढ़ोतरी की गई।

अन्य फरार आरोपित की जल्द गिरफ्तारी हेतु अलग से टीमें गठित की गई ।

आरोपितों के आपराधिक इतिहास की जानकारी भी की जा रही है।

नाम व पता आरोपित

1-गुड्डू चौधरी पुत्र सतपाल सिंह निवासी शिवालिक नगर कोतवाली रानीपुर जनपद हरिद्वार।

2-मनोज कुमार पुत्र निवासी ग्राम बिटावडा थाना बुढ़ाना जिला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश।

3-सोनू उर्फ हरेंद्र चौधरी पुत्र सतपाल सिंह निवासी टिहरी विस्थापित कॉलोनी कोतवाली रानीपुर हरिद्वार को थाना बुग्गावाला।

4-सन्दीप उर्फ मोनू पुत्र नरेन्द्र निवासी चन्दनहेड़ी ख्वाजापुर थाना छपरोली जिला बागपत उत्तर प्रदेश।

बरामदगी का विवरण

1-01राइफल 315 बोर मय 06 जिन्दा राउंड 02 खोखा कारतूस
2-01पम्प एक्शन गन 12 बोर मय 04 जिन्द कारतूस
3-01देशी पिस्टल 32 बोर 02 मैगजीन मय 06 जिंदा कारतूस
4-फॉर्च्यूनर कर नंबर ह्वद्म08 बीक्यू 9009

पुलिस टीम

1-प्रभारी चौकी बाजार उप निरीक्षक पुष्कर सिंह चौहान
2-हेड कांस्टेबल धर्मेंद्र
3-कांस्टेबल उमेद सिंह
4-कांस्टेबल सत्येंद्र सिंह
5-कांस्टेबल नवीन छेत्री
6-कांस्टेबल हुकुम सिंह
7-कांस्टेबल रवि चौहान
8-कांस्टेबल सन्दीप कुमार

एक नजर

एम्पायर स्टेट बिल्डिंग पर चढ़कर किया प्रपोज, अब रूस भेजे जाने का खतरा ; रूसी कपल की मुश्किलें बढ़ीं

न्यूयॉर्क। अमेरिका की मशहूर एम्पायर स्टेट बिल्डिंग की 443 मीटर ऊंची एंटीना संरचना पर चढ़कर प्यार और शांति का संदेश देने वाले रूसी कपल की मुश्किलें बढ़ गई हैं। एंजेला निकोलाउ (33) और इवान कुजनेत्सोव (32) को अमेरिका से निर्वासित किए जाने का खतरा है। अभियोजन पक्ष ने उनके साथ हुई समझौते की पेशकश वापस ले ली है, जिसके बाद उन्हें गंभीर आपराधिक आरोपों का सामना करना पड़ सकता है। यह घटना जुलाई 2026 की है। दोनों ने इमारत के सबसे ऊंचे हिस्से तक पहुंचकर एक बैनर लहराया था, जिस पर लिखा था- जब प्यार की ताकत, सत्ता के प्यार पर भारी पड़ती है, तो दुनिया शांति को जानती है। इसके बाद इवान ने एंजेला को शादी के लिए प्रपोज किया था। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। दोनों मूल रूप से रूस की राजधानी मॉस्को के रहने वाले हैं और ऊंची इमारतों पर जोखिम भरे स्टंट करने के लिए जाने जाते हैं। इस घटना के बाद उन पर सेंधमारी, लापरवाही से दूसरों की जान खतरे में डालने, आपराधिक घुसपैठ और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने सहित कई आरोप लगाए गए थे। 12 नवंबर को दोनों न्यूयॉर्क की अदालत में पेश हुए।

उनके वकील नोआम बियाले के मुताबिक, अभियोजन पक्ष ने पहले मामूली अपराध स्वीकार करने के बदले गंभीर आव्रजन कार्रवाई से बचाने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन सुनवाई से एक रात पहले इसे वापस ले लिया गया। वकील ने आशंका जताई कि रूस लौटने पर इवान को यूक्रेन युद्ध में भेजा जा सकता है, जबकि एंजेला को उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए जेल हो सकती है। कपल ने कहा कि उनका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुंचाना नहीं, बल्कि शांति का संदेश देना था।

डोनबास छोड़ने के बदले यूक्रेन को नाटो सदस्यता का प्रस्ताव? जेलेंस्की ने अमेरिकी बातचीत का किया खुलासा

कीव। रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध खत्म कराने की कोशिशों के तहत अमेरिका ने एक नया विकल्प सामने रखा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की के मुताबिक, अमेरिकी वार्ताकारों ने सवाल उठाया है कि क्या यूक्रेन नाटो की सदस्यता मिलने की स्थिति में अपने पूर्वी क्षेत्र डोनबास से सेना हटाने को तैयार होगा। जेलेंस्की ने कहा कि शांति वार्ता के दौरान पहली बार इस तरह का सवाल उठाया गया है। जेलेंस्की ने शुक्रवार को पत्रकारों से बातचीत में बताया कि यह मुद्दा अबू धाबी में रूस और यूक्रेन के बीच हुई अमेरिकी मध्यस्थता वाली वार्ता के दौरान उठा। उन्होंने कहा कि यूक्रेन नाटो और यूरोपीय संघ के साथ ठोस सुरक्षा गारंटी पर चर्चा कर रहा है।

सीएम योगी ने किया अलर्ट तो 'मिशन 25 हजार' में जुटी भाजपा, हर बूथ पर वोटर जोड़ने की प्लानिंग

लखनऊः उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछले दिनों कहा था कि 1.27 करोड़ हिंदू वोटरों के नाम वोटर लिस्ट से कट गए हैं. उनका कहना था कि आखिर हिंदू वोटरों की संख्या कम कैसे हो गई है. उनकी इस टिप्पणी के बाद भाजपा सक्रिय हो गई है. पार्टी की गुरुवार को SIR को लेकर मीटिंग थी, जिसमें फैसला लिया गया कि हर विधानसभा में संगठन जुटेगा. बूथ स्तर पर कार्यकर्ता जुटेंगे और हर बूथ पर कम से कम 50 ऐसे पात्र वोटरों के नाम जोड़े जाएंगे, जो



छूट गए हैं. इसके लिए भाजपा की ओर से अभियान ही शुरू किया जाएगा. इसकी शुरुआत 19 नवंबर से होगी और नाम 'मतदाता जोड़ो अभियान' रखा गया है.

हर विधानसभा के स्तर पर करीब 25 हजार वोटरों को जोड़ा जाएगा. सीएम योगी आदित्यनाथ ने भी इसके लिए आह्वान किया और उनका कहना था कि इलेक्टोरल प्रॉसेस में हिस्सेदारी करना हमारा संवैधानिक दायित्व है. हमें कोशिश करनी होगी कि भाजपा के समर्थक वर्ग के लोगों के नाम वोटर लिस्ट से छूटें नहीं. उन्होंने कहा कि फॉर्म 6, 7 और 8 का अच्छे से इस्तेमाल हो और उनके माध्यम से पात्र मतदाता जोड़े जाएं.

अपात्रों को हटवाया जाए. भाजपा सूत्रों का कहना है कि यदि हर विधानसभा में 10 से 25 हजार तक छूटे वोटरों को जोड़ लिया जाए तो इसका फायदा मिलेगा. भाजपा का मानना है कि 40 से 80 लाख तक नाम भी वापस जुड़ जाते हैं उसके लिए यह पर्याप्त होगा. सीएम योगी आदित्यनाथ ने महिलाओं पर भी फोकस करने को कहा. उनका कहना था कि शादी के बाद बहुत सी महिलाओं का नाम अपने मायके में कट जाता है, लेकिन ससुराल में नहीं जुड़ पाता. ऐसी महिलाओं के नामों को प्राथमिकता के आधार पर वोटर लिस्ट में जुड़वाया जाए. इसके अलावा 1 जनवरी को 18 साल की आयु पूरी करने वाले लोगों के नामों को भी जुड़वाने की बात उन्होंने कही. सीएम की ओर से चिंता जाहिर करने के बाद भाजपा का संगठन अब सक्रिय हो गया है. यही वजह थी कि जिला स्तर से लेकर बूथ तक एक्टिव किया जा रहा है. प्रवासी मतदाताओं पर भी सीएम योगी ने फोकस बढ़ाने को कहा है. उन्होंने कहा कि यूपी की अलग-अलग विधानसभाओं के लोग नोएडा या दिल्ली में नौकरी करते हैं. उनका वोट कई बार गांव से कट जाता है और शहर में जुड़ता भी नहीं हैं. ऐसे में उनके परिवारों से संपर्क किया जाए और सभी के वोटों को जुड़वाया जाए.

संसद की सुरक्षा में सेंध लगाने वालों को फिर जमानत नहीं, कोर्ट ने बताई ये वजह

नई दिल्ली। संसद की सुरक्षा में सेंध लगाने के मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने आरोपी मनोरंजन डी और सागर शर्मा को जमानत देने से इनकार कर दिया है। अदालत ने कहा कि दोनों आरोपियों की मंशा संसद पर वर्ष में हुए आतंकी हमले की बरसी के दिन आतंक जैसी स्थिति पैदा करने और संसद की कार्यवाही बाधित करने की थी। गवाहों के बयानों से पता चलता है कि आरोपियों ने कथित आतंकी गतिविधि को अंजाम देने के लिए पहले से बैठकें की थीं और उनमें पूरी योजना पर चर्चा की गई थी।

विशेष एनआईए न्यायाधीश किरण बंसल की अदालत ने कहा कि मामले में आरोपियों के खिलाफ लगाए गए आरोप प्रथम दृष्टया सही प्रतीत होते हैं। ऐसे में यूएपीए की धारा 43डी(5) के तहत जमानत देने पर वैधानिक रोक लागू होती है। दोनों आरोपियों



की जमानत याचिकाएं ट्रायल कोर्ट से दूसरी बार खारिज हुई हैं।

अदालत ने कहा कि 13 दिसंबर 2023 को दोनों आरोपी संसद की दर्शक दीर्घा से लोकसभा कक्ष में कूद गए थे। उन्होंने अपने जूतों में छिपाकर रखे रंगीन धुएं वाले कनिस्टर निकाले और सदन के भीतर धुआं फैला दिया। इस घटना से लोकसभा की कार्यवाही बाधित हुई और वहां मौजूद सांसदों समेत अन्य लोगों में अफरातफरी मच गई। घटना के दृश्य तत्काल सभी समाचार चैनलों पर प्रसारित हुए।

अदालत ने यह भी कहा कि आरोपियों को खालिस्तानी अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की ओर से भारतीय संसद को निशाना बनाने की धमकी की जानकारी थी। आरोपियों ने सह-आरोपियों नीलम रानोलिया और महेश कुमावत को जमानत मिलने के आधार पर भी राहत मांगी थी। हालांकि, अदालत ने इस दलील को स्वीकार नहीं किया।

1980 के दशक में भारत ने मौका गंवाया, चीन आगे निकल गया; जयशंकर ने राजीव गांधी को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली। 1980 के दशक में भारत और चीन की एक जैसी अर्थव्यवस्था थी। हालांकि, आज के समय में यह अंतर काफी बड़ा हो चुका है। भारत की तुलना में चीन काफी मजबूत स्थिति में है। विदेश मंत्री एस जयशंकर से जब इस अंतर पर राय पूछी गई तो उन्होंने इसके लिए देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि 1980 के दशक में भारत ने मौका गंवा दिया और चीन हमसे आगे निकल गया। एस जयशंकर ने कहा, 'भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जब 1988 में चीन की राजधानी बीजिंग गए थे तब भारत और चीन की अर्थव्यवस्था एक आकार की थी। लेकिन 1980 के दशक में चीन में बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण हुआ। वहीं भारत इस मौके का लाभ उठाने से चूक गया।' विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत-चीन सीमा पर जारी गतिरोध



पर भी अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि चीन के साथ लगी सीमा एक तरह से और अधिक सक्रिय हो गई है। जयशंकर ने गलवान का जिक्र करते हुए कहा, 'उस सीमा पर हमारी खुद को बनाए रखने और सेना तैनात करने की क्षमता में सुधार हुआ है। मैं कहूंगा कि इसमें काफी महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।

1980 के दशक की शुरुआत में दोनों देशों की कुल जीडीपी लगभग बराबर थी। भारत की जीडीपी करीब 186-200 अरब अमेरिकी डॉलर और चीन की लगभग 300 अरब अमेरिकी डॉलर के आसपास थी। प्रति व्यक्ति आय के मामले में भी दोनों देशों की स्थिति एक जैसी थी। गरीबी का स्तर भी काफी हद तक एक जैसा था। दोनों ही देशों में कमजोर और सीमित संसाधनों वाले लोगों की संख्या बहुमत में थी। दोनों देशों की औसत आर्थिक विकास दर उस समय करीब 3% से 4% के आसपास बनी हुई थी। चीन ने 1978 में ही देंग शियाओपिंग के नेतृत्व में आर्थिक सुधारों की शुरुआत कर दी थी और विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) बनाए। जबकि भारत ने बड़े स्तर पर बाजार को 1991 के उदारीकरण के बाद खोला। चीन ने अपने आपको वैश्विक विनिर्माण और निर्यात का हब बनाया, जबकि भारत का ध्यान बाद के वर्षों में मुख्य रूप से आईटी और सर्विस के क्षेत्र पर अधिक रहा।

दिल्ली पुलिस रामलीला मैदान में प्रदर्शन के लिए बना रही नई SOP, 50000 से अधिक लोगों की एंट्री पर लग सकती है रोक

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने रामलीला मैदान में होने वाली रैलियों और सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों को रेगुलेट करने के लिए नई गाइडलाइंस तैयार की हैं। इनमें प्रतिभागियों की संख्या 50,000 तक सीमित रखने और ऐसे आयोजनों के लिए सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक का समय तय करने का प्रस्ताव है।

एक सीनियर पुलिस अफसर ने बताया कि स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (SOP) का ड्राफ्ट मंजूरी के लिए दिल्ली पुलिस हेड क्वार्टर्स भेजा गया है। यह प्रस्ताव अभी शुरुआती चरण में है और इसके प्रावधानों को अंतिम रूप दिया जाना बाकी है।

दिल्ली पुलिस की इस



प्रस्तावित गाइडलाइंस का मकसद सेंट्रल दिल्ली के रामलीला मैदान में होने वाले विरोध प्रदर्शनों, रैलियों और जनसभाओं को सेफ्टी, सिक्योरिटी और प्रशासनिक व्यवस्थाओं के एक निश्चित दायरे में लाना है।

नई प्रस्तावित व्यवस्था के तहत आयोजकों को दिल्ली पुलिस से अनुमति मांगने से पहले, स्थान की उपलब्धता के संबंध में दिल्ली नगर निगम (MCD) से मंजूरी लेनी होगी। प्रस्तावित कार्यक्रम से कम से कम 10 दिन पहले आवेदन जमा करना होगा। एसओपी के ड्राफ्ट में यह भी कहा गया है कि भीड़ को संभालने की जिम्मेदारी आयोजकों की होगी। इसमें ट्रैफिक पुलिस अधिकारियों के साथ समन्वय, पार्किंग की व्यवस्था और लोगों के आने-जाने (ड्रॉप-ऑफ पॉइंट) के लिए जगह तय करना शामिल है। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सड़कें और आपातकालीन रास्तों पर किसी तरह की रुकावट न हो।

प्रस्तावित सिक्योरिटी गाइडलाइंस में बंदूकों, तलवारों, भालों, नुकीली वस्तुओं और अन्य प्रतिबंधित चीजों पर रोक शामिल है। इतना ही नहीं, आयोजकों को रामलीला मैदान के आसपास ड्रोन उड़ाने के लिए भी पहले से इजाजत लेनी होगी। पीने के पानी, मेडिकल हेल्प, साफ-सफाई की सुविधाओं और कचरे के उचित निपटान का भी इंतजाम करना होगा।

NCP के दोनों गुटों के विलय पर लगा विराम, लेकिन NDA में शामिल हो सकते हैं शरद पवार

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति से सबसे पहले खबर आई कि शरद पवार की बनाई राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के दोनों गुट फिर से एक हो सकते हैं। हालांकि, अब इन अटकलों पर विराम लगता दिख रहा है। लेकिन, सूत्रों का कहना है कि शरद पवार भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल होने का विकल्प तलाश रहे हैं। नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) बिना मर्जर के ही NDA में शामिल होने की संभावना तलाश रहा है। उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार के कार्यालय से पार्टी के विधायकों को फोन किए गए हैं। इसका



मकसद यह जानना है कि विधायकों का रुख क्या है और मौजूदा राजनीतिक हालात क्या हैं। इस बातचीत से कुछ सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश की जा रही है। क्या दोनों गुटों का विलय होना चाहिए? बदलते राजनीतिक माहौल में विधायकों की स्थिति क्या होगी?

सूत्रों का कहना है कि शरद पवार का गुट एक अलग पार्टी के रूप में सत्ताधारी गठबंधन में शामिल होने के विकल्प पर विचार कर रहा है। सुप्रिया सुले ने गुरुवार को दिल्ली में साफ-साफ कहा, 'विलय की चर्चा उसी पल खत्म हो गई थी जब मेरे भाई ने पार्टी छोड़ी थी। मराठी समाचार चैनल ABP माझा ने सूत्रों के हवाले से कहा है कि नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) यह देख रही है कि क्या वह एक स्वतंत्र पार्टी के तौर पर महायुति में शामिल हो सकती है। माना जा रहा है कि अगर यह गुट एक अलग पार्टी के रूप में NDA में शामिल होता है तो उन्हें केंद्र में कोई अहम मंत्रालय और राज्य मंत्रिमंडल में भी कोई पद मिल सकता है। सुनेत्रा पवार की एनसीपी ने भी साफ कर दिया है कि उन्हें इससे कोई ऐतराज नहीं है।

भारत ने UN में नहीं दिया अमेरिका-इजरायल का साथ, फिलिस्तीन का किया खुला समर्थन

नई दिल्ली। फिलिस्तीन के मुद्दे पर भारत ने एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र में अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। भारत ने अमेरिका और इजरायल के विरोध के बावजूद फिलिस्तीनी लोगों के प्राकृतिक संसाधनों पर उनके स्थायी अधिकारों से जुड़े प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा की दूसरी समिति में 11 नवंबर 2026 को इस प्रस्ताव पर मतदान हुआ। इसमें भारत समेत 151 देशों ने समर्थन किया, जबकि अमेरिका और इजरायल सहित सात देशों ने इसके विरोध में वोट दिया। 11 देश मतदान से दूर रहे यानी उन्होंने मतदान में हिस्सा नहीं लिया या प्रस्ताव के पक्ष-विपक्ष में वोट नहीं दिया।

यह मतदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत के इजरायल के साथ पिछले कुछ



वर्षों में रणनीतिक, रक्षा और आर्थिक संबंध मजबूत हुए हैं। इसके बावजूद फिलिस्तीन के अधिकारों और दो राष्ट्र समाधान को लेकर भारत ने अपनी पारंपरिक विदेश नीति के अनुरूप मतदान किया है।

संयुक्त राष्ट्र में जिस प्रस्ताव पर मतदान हुआ, उसका नाम 'पूर्वी यरुशलम सहित कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्र में फिलिस्तीनी लोगों की, और कब्जे वाले सीरियाई गोलान में अरब आबादी की, अपने प्राकृतिक संसाधनों पर स्थायी संप्रभुता' है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि फिलिस्तीनी लोगों को अपने प्राकृतिक संसाधनों पर स्थायी अधिकार मिलना चाहिए। इसमें जमीन, पानी और ऊर्जा जैसे संसाधन शामिल हैं। प्रस्ताव का दायरा सिर्फ फिलिस्तीन के कब्जे वाले इलाकों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पूर्वी यरुशलम और कब्जे वाले सीरियाई गोलान में रहने वाली अरब आबादी के संसाधनों के अधिकारों का भी उल्लेख है।

यह प्रस्ताव ग्रुप ऑफ 77 और चीन की ओर से पेश किया गया था। इसे उरुग्वे ने समूह की तरफ से संयुक्त राष्ट्र की दूसरी समिति में प्रस्तुत किया। प्रस्ताव में इजरायल से मांग की गई है कि वह फिलिस्तीनी क्षेत्रों और कब्जे वाले सीरियाई गोलान में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, नुकसान और उन्हें नष्ट करने वाली गतिविधियां बंद करे। इसमें फिलिस्तीनियों के संसाधनों को हुए नुकसान के बदले मुआवजे या क्षतिपूर्ति का दावा करने के अधिकार को भी मान्यता दी गई है।

इस प्रस्ताव में केवल प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार की बात नहीं की गई, बल्कि कब्जे वाले इलाकों में आम लोगों के जीवन से जुड़े कई गंभीर मुद्दों का भी उल्लेख है।

फिलिस्तीनी लोगों के जमीन, पानी और ऊर्जा संसाधनों पर अधिकारों को दोहराया गया है। प्रस्ताव के मुताबिक, किसी भी बाहरी शक्ति को इन संसाधनों का इस तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जिससे वहां रहने वाले लोगों के अधिकार प्रभावित हों।

प्राकृतिक संसाधनों का दोहन रोकने की मांग: इजरायल से कहा गया है कि वह कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों और सीरियाई गोलान में प्राकृतिक संसाधनों के शोषण, नुकसान और उनके क्षरण से जुड़ी गतिविधियां बंद करे।

'PM फोन टैप नहीं करते....' राहुल गांधी के आरोपों पर सैम पित्रोदा का बड़ा बयान

नई दिल्ली। राहुल गांधी के फोन टैपिंग के आरोपों के बीच कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने बड़ा बयान दिया है, उनका कहना है कि प्रधानमंत्री फोन टैप नहीं करते है. उन्होंने यह बात कही है. सैम पित्रोदा का यह बयान बड़ा माना जा रहा है. क्योंकि एक दिन पहले ही राहुल गांधी ने सरकार पर अपना फोन टैप कराने का आरोप लगाया था. उनका कहना था कि मेरे फोन में सारे सबूत हैं, इसलिए उनका फोन टैप करवाया जा रहा है, यह काम सरकार की तरफ से किया जा रहा है. इस बीच अब सैम पित्रोदा का कहना है कि प्रधानमंत्री ऐसा नहीं करते. जिससे उनका बयान अहम माना जा रहा है. राहुल गांधी के फोन टैपिंग के आरोपों से खुद



को अलग करते हुए सैम पित्रोदा ने कहा 'प्रधानमंत्री ऐसा नहीं करते, प्रधानमंत्री कोई पेचकस लेकर कंप्यूटर पर नहीं बैठ जाते.'हालांकि सैम पित्रोदा का कहना है कि उनके पास यह मानने की ठोस वजह है कि उनका फोन भी टैप किया जा रहा है, मेरा फोन टैप हो रहा है, मेरे लैपटॉप पर हमले हो रहे हैं और मेरे बैंक खातों पर नजर रखी जा रही है. मैंने विशेषज्ञों से सलाह ली है और उन्होंने मेरे डिवाइस की जांच करने के बाद मुझे फोन टैपिंग को लेकर आगाह किया है. उन्होंने यह नहीं बताया कि उन्हें किस पर शक है कि किसने उनका फोन टैप किया है. सैम पित्रोदा ने कहा 'कोई तो ऐसा कर रहा है, मुझे नहीं पता और मुझे परवाह भी नहीं है. मैं इसी के साथ जी रहा हूं. इसमें मुझे किसी तरह की कोई दिक्कत भी नहीं है. आस-पास कुछ बुरे लोग हैं, लेकिन ऐसी स्थिति में क्या कर सकते हैं?

दरअसल, सैम पित्रोदा का यह बयान इसलिए अहम माना जा रहा है क्योंकि शुक्रवार को ही राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर अपना फोन टैप करवाने का आरोप लगाया था.

होटल में युवती के साथ मिला मुस्लिम युवक, गया जेल

भोपाल। राजधानी भोपाल के ईंटखेड़ी थाना इलाके में स्थित एक होटल में हिंदु युवती और मुस्लिम युवक ने पकड़े जाने के बाद कमरे से भागने के लिये खिड़की से छलांग लगा दी। नीचे बने टीन शेड पर कूदने के बाद उन्होंने भागने की कोशिश की। लेकिन करीब 50 फीट तक आगे जाने के बाद टीन शेड खत्म हो गया आगे गिरने का खतरा देख दोनों वापस लौट आए। इसी दौरान हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने युवक को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। घटना 12 नवंबर की शाम की है, जबकि इसका वीडियो 14 नवंबर को सामने आया है। बताया गया है कि पुलिस ने आरोपी युवक को जेल भेज दिया है।

जानकारी के मुताबिक, हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं को होटल में युवक-युवती के होने की सूचना मिली थी। कार्यकर्ता जब कमरे के बाहर पहुंचे तो अंदर मौजूद युवक और युवती घबराकर बाहर निकलने के लिये खिड़की के रास्ते से भागने लगे। दोनो टीन शेड पर कूदकर भागने लगे। लेकिन कुछ दूरी पर रास्ता खत्म होने के कारण उन्हें वापस लौटना पड़ा। मामले में आरोपी युवक सलमान खान नाम के युवक को पुलिस के हवाले किया गया। पुलिस ने उसके खिलाफ धारा 151 के तहत कार्रवाई कर उसे जेल भेज दिया। जांच में यह बात भी सामने आई है कि युवक ने युवती की मुस्लिम नाम से फर्जी आईडी तैयार कराई थी। इसी आईडी का इस्तेमाल कर होटल में कमरा बुक किया गया था। पुलिस अब जांच कर रही है कि युवती के नाम से फर्जी आईडी किसने और कैसे तैयार की। पुलिस मामले से जुड़े तथ्यों और फर्जी आईडी के इस्तेमाल की जांच कर रही है। घटना से जुड़े वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आए हैं, जिसमें युवक को पकड़ने के बाद कार्यकर्ता उसकी पिटाई कर रहे हैं।

महिला ने छूने पर आपत्ति जताई तो पीट-पीटकर मार डाला

नई दिल्ली। दिल्ली के बुराड़ी इलाके में दिल दहला देने वाली एक घटना सामने आई है। 20 साल की एक महिला ने एक आदमी द्वारा उसे छूने पर आपत्ति जताई तो उस आदमी ने कथित तौर पर उसे पीट-पीटकर मार डाला। पुलिस के अनुसार, यह घटना 7 नवंबर की रात को हुई थी। 8 नवंबर को बुराड़ी इलाके में एक खाली प्लॉट के पास महिला का शव मिला। आरोपी की पहचान प्रमोद सिंह के रूप में हुई है, जिसे शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के अनुसार, स्थानीय दुकानदारों ने



महिला को सड़क किनारे खराब हालत में पड़ा हुआ देखा।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आरोपी प्रमोद सिंह उस इलाके से गुजर रहा था। इसी दौरान उसकी नजर एक महिला पर पड़ी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि हमारी जांच और पूछताछ के मुताबिक वह महिला को जबरन उठाकर पास के एक खाली प्लॉट में ले गया। महिला ने उसके छूने का विरोध किया। इसके बाद दोनों के बीच बहस हो गई। देखते ही देखते यह बहस हाथापाई में बदल गई। आरोपी ने पुलिस को बताया है कि गुस्से में आकर उसने किसी चीज से महिला पर कई बार वार किया, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि महिला का शव मिलने के बाद मामले की जांच शुरू की गई। सीसीटीवी फुटेज और गवाहों की तलाश की गई। जांच-पड़ताल के बाद आरोपी की पहचान कर ली गई और बाद में शुक्रवार को उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उधर, खजूरी इलाके में गुरुवार रात बुजुर्ग दोस्त से मिलने गई 40 साल की महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी बुजुर्ग ने महिला के शव को सड़क किनारे फेंक दिया। खजूरी थाना पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार, मृतका अपने पति और दो बच्चों के साथ खजूरी थाना क्षेत्र में रहती थी।

स्वामी/ प्रकाशक / मुद्रक
प्रमोद कुमार ने जय माँ गंगा प्रिंटर्स, हरिद्वार से मुद्रित कराकर कार्तिकेय कॉलोनी, फेस-3, दर्पण स्कूल वाली गली, निकट हनुमान मंदिर, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी जनपद-नैनीताल (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।
सम्पादक
प्रमोद कुमार
मो.7830201066

सह-सम्पादक
दया जोशी
मो.9412135616